सितम्बर 2024

दादावाणी

Retail Price ₹ 20

देह में आत्मा का स्थान कहाँ है?
आत्मा साकारी है या निराकारी है?
आत्मा वस्तु है या अवस्तु है?
आत्मा का स्वरूप कैसा दिखाई देता है?
आत्मा विनाशी है या अविनाशी है?
आत्मा की उत्पति का कारण क्या है?
आत्मा कहाँ से आया होगा?
आत्मा को किसने बनाया है?
आत्मा कैसा होगा?
आत्मा यानी क्या?

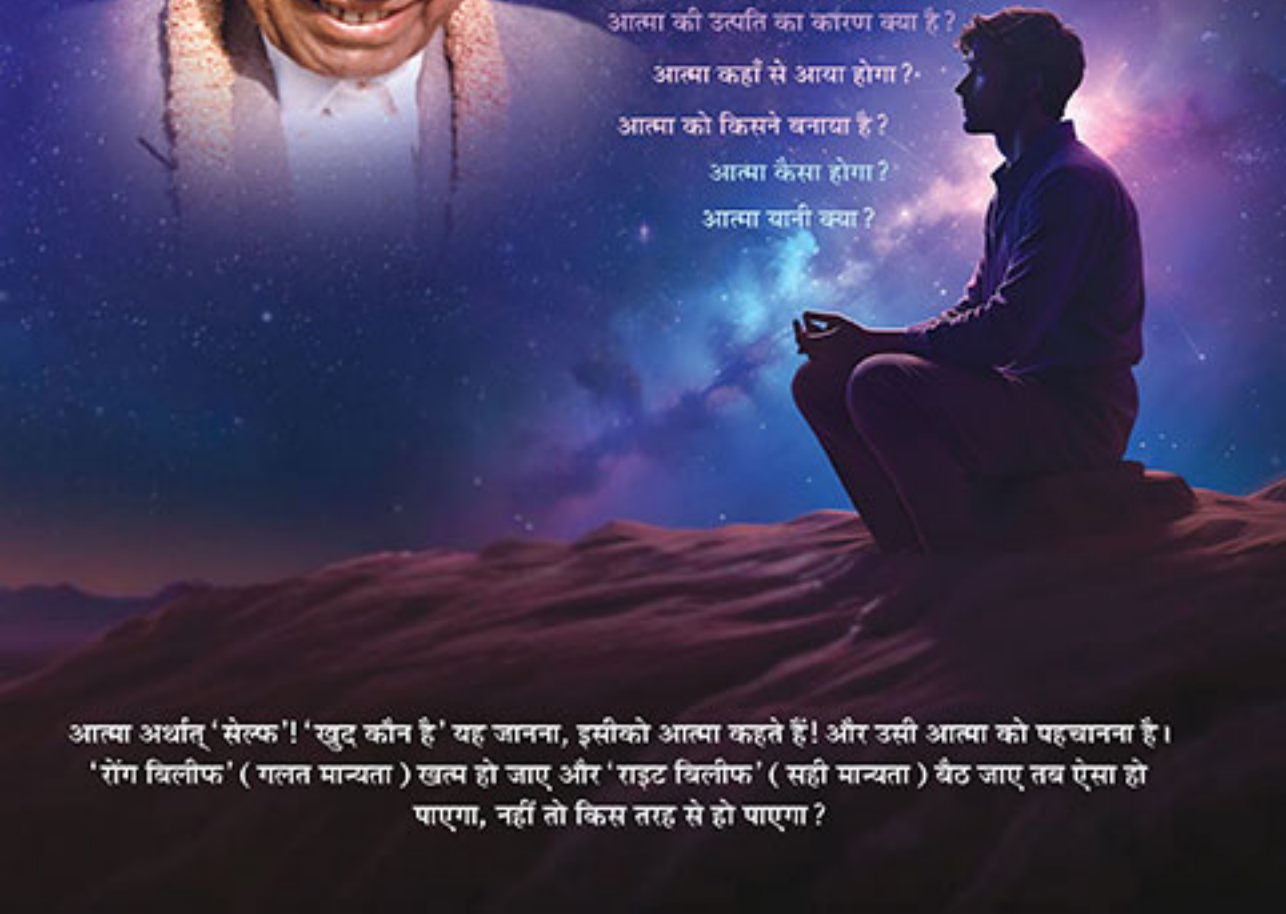

आत्मा अर्थात् 'सेल्फ'! 'खुद कौन है' यह जानना, इसीको आत्मा कहते हैं! और उसी आत्मा को पहचानना है। 'रोंग बिलीफ' (गलत मान्यता) खत्म हो जाए और 'राइट बिलीफ' (सही मान्यता) बैठ जाए तब ऐसा हो पाएगा, नहीं तो किस तरह से हो पाएगा?

आत्मज्ञानी पूज्यश्री दीपकभाई का अमरिका-कनाडा सत्संग प्रवास

टोरन्टो : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 10 से 14 जुलाई 2024

शिकागो : गुरुपूर्णिमा महोत्सव : ता. 16 से 22 जुलाई 2024

वर्ष : 19 अंक : 11
अखंड क्रमांक : 227
सितम्बर 2024
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2024
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School, At-Chhatral, Tal: Kalol, Dist. Gandhinagar - 382729

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 1000 रुपये
वार्षिक
भारत : 200 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

आत्मा क्या है? कैसा है? कहाँ है?

संपादकीय

इस ब्रह्मांड की सूक्ष्मतम और गुह्यतम वस्तु कि जो खुद का स्वरूप ही है, 'खुद' ही 'जो' है, 'वह' समझ में नहीं आने से 'आत्मा ऐसा होगा, वैसा होगा, प्रकाश स्वरूप होगा, वह प्रकाश कैसा होगा', ऐसे आत्मा संबंधी असंख्य प्रश्न जिज्ञासु-मुमुक्षुओं को आते ही रहते हैं। अनादि से आत्मा संबंधी जो भ्रांत मान्यताएँ पड़ी हैं, उनसे बाहर निकलने के लिए जिज्ञासु-आत्मार्थी को अपनी ही भाषा में आत्मा संबंधी स्पष्टता हो जाए और साथ ही साथ आत्मा के स्वरूप को तथारूप दृष्टि में लाने के लिए, अक्रम विज्ञानी दादा भगवान (दादाश्री) द्वारा उद्बोधित ज्ञान प्रकाश से ही प्राप्त हो सके, ऐसा है।

जगत् में आत्मा के अस्तित्व की रही हुई आशंका से लेकर, आत्मा कहाँ से आया होगा? आत्मा को किसने बनाया? आत्मा की उत्पत्ति का कारण क्या है? आत्मा यानी क्या? कैसा होगा? आत्मा वस्तु होगा या अवस्तु? आत्मा का स्वरूप कैसा दिखाई देता है? आत्मा साकारी है या निराकारी? आत्मा विनाशी है या अविनाशी? देह में आत्मा का स्थान कहाँ है? भाजन अनुसार आत्मा का संकोच-विकास? निश्चय आत्मा और व्यवहार आत्मा के भेद वगैरह पर दादाश्री की वाणी में से बेसिक सत्संग प्रस्तुत अंक में संकलित हुआ है।

आत्मा के अस्तित्व को प्रमाणित करते हुए 'दादाश्री' कहते हैं कि जैसे खुशबू, इत्र के अस्तित्व को खुला कर देती है, वैसे ही आत्मा अरूपी होने के बाबजूद उसके स्वभाव पर से पहचाना जा सकता है। अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत शक्ति, अनंत सुख ऐसा स्वरूप आत्मा का है। खुद के स्वरूप का भान खुद को हो जाए, उसके बाद ही वे सर्व गुण ज्ञानजागृति से निरावरण होते हैं!

जब स्थूल देह से आत्मा छूटता है तब आत्मा के साथ सूक्ष्म देह, कारण देह साथ में जाते हैं और कारण देह के आधार पर दूसरा शरीर प्राप्त होता है। अनंत जन्म-मरण की अवस्थाओं में भी अजन्मा-अमर ऐसा आत्मा हमेशा से शुद्ध ही है! तो उसे ये सभी कर्म कैसे चिपके होंगे? *पुद्गल* के साथ खुद को जन्मोंजन्म का साथ क्यों करना पड़ा? वास्तव में आत्मा तो शुद्ध ही है, सिर्फ अपनी 'बिलीफ' 'रोंग' बैठी हुई हैं। वह 'रोंग बिलीफ' गई कि हो गया खुद संपूर्ण स्वतंत्र! बाकी, न तो *पुद्गल* आत्मा से चिपका है या न ही आत्मा *पुद्गल* से चिपका है!

इस दुनिया में जानने जैसी कोई चीज़ है तो वह आत्मा है। सामान्य तौर पर अपने आप आत्मा को कोई नहीं जान सकता। उसे जानने वाले लोग दुनिया में शायद ही कोई होते हैं, 'ज्ञानी पुरुष' ने आत्मा देखा-जाना और अनुभव किया होता है और 'खुद' 'आत्मा' स्वरूप में ही रहते हैं। अतः ऐसे 'ज्ञानी पुरुष' से तमाम मुमुक्षु 'आत्मा' को जानकर, उनकी आज्ञा अनुसार चलकर मोक्षमार्ग में प्रगति करें, यही हृदयपूर्वक अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

आत्मा क्या है? कैसा है? कहाँ है?

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

आत्मा के अस्तित्व की आशंका किसे?

प्रश्नकर्ता : आत्मा होगा या नहीं, यह शंका उत्पन्न हो, ऐसा है।

दादाश्री : आत्मा है ही।

प्रश्नकर्ता : इन सभी फॉरेन के साइन्टिस्टों ने ऐसी सब खोज की है कि काँच के बॉक्स में मरते हुए आदमी को रखकर जीव किस तरह से जाता है, कहाँ से जाता है, इन सबकी जाँच करने के लिए बहुत प्रयत्न किए हैं, परंतु 'आत्मा है या नहीं', ऐसा कुछ लगा नहीं। 'जीव है ही नहीं' ऐसा सिद्ध कर दिया।

दादाश्री : नहीं, परंतु 'यह अजीव है' ऐसा कहते हैं? यह पेटी अजीव है या नहीं? अजीव ही है न? तब फिर यह मनुष्य और यह पेटी सब एक सरीखा है?

प्रश्नकर्ता : नहीं, ऐसा नहीं है। परंतु जीव जैसी कोई वस्तु बाहर नहीं निकलती, ऐसा कहना चाहते हैं।

दादाश्री : ये साइन्टिस्ट (वैज्ञानिक) 'मनुष्य' बनाते हैं, नये हृदय बनाते हैं, सबकुछ बनाते हैं न? अगर वे नया मनुष्य बना दें, तो क्या अपने जैसा व्यवहार कर सकेगा वह?

प्रश्नकर्ता : नहीं कर सकेगा।

दादाश्री : तो फिर किस आधार पर वे समझते हैं कि जीव जैसा कुछ है ही नहीं?

प्रश्नकर्ता : उन लोगों ने तो काँच की पेटी में मरते हुए मनुष्य को रखा था, परंतु जीव निकलते समय कुछ भी दिखा नहीं इसलिए मान लिया कि जीव नहीं है।

दादाश्री : ऐसा है न, या तो कोई नासमझ मना करेगा, या फिर समझदार मना करेगा परंतु इस कारण से सभी लोगों को शंका उत्पन्न नहीं होती है न! और जो शंका करता है न, कि जीव जैसी वस्तु नहीं है, जो ऐसा कहता है न, वही खुद जीव है। जिसे शंका होती है न, वही जीव है, नहीं तो शंका होगी ही नहीं। और ये दूसरी जड़ वस्तुएँ हैं न, इनको किसी को भी शंका नहीं होती। यदि किसी को शंका होती है, तो वह जीव को ही होती है, अन्य कोई चीज़ ऐसी नहीं है कि जिसे शंका होती हो। आपको समझ में आता है ऐसा?

मरने के बाद उसे खुद को शंका होगी? नहीं, तो क्या चला जाता होगा? हृदय बंद हो जाता होगा? क्या होता होगा?

प्रश्नकर्ता : हृदय बंद हो जाता है, इसलिए मनुष्य मर जाता है।

दादाश्री : हाँ, उससे तो मनुष्य मर ही जाता है। श्वास के आधार पर ही यह जीवित रहता है। यह जीव जो अंदर है न, वह श्वास के आधार पर ही टिका हुआ है। जब तक श्वास चलती रहेगी, तब तक वह रहेगा।

प्रश्नकर्ता : परंतु जब शरीर के महत्वपूर्ण

अवयव काम करना बंद कर दें, तब मनुष्य की मृत्यु हो जाती है। यदि ऐसा ही है, तो जीव जैसी वस्तु ही नहीं रही।

दादाश्री : जीव जैसी वस्तु है ही। वह खुद ही जीव है, फिर भी खुद अपने आप पर शंका करता है। जिसे यह शंका होती है न, वही जीव है। इस देह में जीव नहीं है, ऐसी जो शंका करता है न, वही जीव है। खुद के मुँह में जीभ हो और खुद बोले कि, 'मेरे मुँह में जीभ नहीं है', यही सिद्ध करता है कि जीभ है ही अंदर। इसलिए यह शंका है। यह वाक्य ही विरोधाभासी है। लोग कहते हैं, 'जब मनुष्य का निधन होता है, तब उसमें जीव जैसी कोई वस्तु नहीं रहती', ये शब्द खुद ही शंका उत्पन्न करते हैं, उसे शंका हुई है। यह शंका ही सिद्ध कर देती है कि जीव है वहाँ पर।

मैं साइन्टिस्टों के पास बैठूँ न, तो उन सभी को तुरंत समझा दूँ कि यह जीव बोल रहा है। तू भला, तेरी नयी शंकाएँ खड़ी कर रहा है? यानी जीव तो देहधारी में है ही।

सनातन वस्तु का आवन-जावन कैसा?

प्रश्नकर्ता : सभी जीव कि जो आत्मा हैं, वे आत्मा इस जगत् में कहाँ से आए होंगे?

दादाश्री : कोई भी आया नहीं है। यह पूरा ही जगत् छः तत्त्वों का प्रदर्शन है। ये जो छः तत्त्व हैं, उन सबके मिलने से ही यह जगत् बना है, वही दिखता है। सिर्फ 'साइन्टिफिक सरकमस्टेनिश्यल एविडेन्स' (वैज्ञानिक सांयोगिक प्रमाण) है! यानी किसी ने इसे बनाया नहीं है, किसी को कुछ करना नहीं पड़ा है। इसकी आदि नहीं है, इसका अंत नहीं है। यह 'जैसा है वैसा' कह दिया है कि जगत् अनादि-अनंत है। सिर्फ एक दृष्टिफेर से जगत् दिखता है और दूसरी दृष्टिफेर से मोक्ष दिखता है। पूरा दृष्टिफेर ही है सिर्फ, और कुछ है ही नहीं।

जो 'आता' है, वह सनातन नहीं हो सकता और आत्मा सनातन वस्तु है, तो फिर उसके लिए 'आया, गया' नहीं हो सकता। जो आता है वह तो चला जाता है, आत्मा ऐसा नहीं है।

सनातन की शुरूआत, वह कैसे?

प्रश्नकर्ता : आत्मा को किसने बनाया?

दादाश्री : उसे किसी ने नहीं बनाया। बनाया होता न, तो उसका नाश हो जाता। आत्मा निरंतर रहने वाली वस्तु है, वह सनातन तत्त्व है। उसकी 'बिगिनिंग' (शुरूआत) हुई ही नहीं। उसे कोई बनाने वाला है ही नहीं। बनाने वाला होता तब तो बनाने वाले का भी नाश हो जाता और बनने वाले का भी नाश हो जाता।

प्रश्नकर्ता : आत्मा जैसी वस्तु किसलिए उत्पन्न हुई है? आत्मा की उत्पत्ति का कारण क्या है?

दादाश्री : ऐसा है न, आत्मा उसी को कहते हैं कि जो उत्पन्न ही नहीं होता, विनाश नहीं होता। वह परमानेन्ट (स्थायी) है। परमानेन्ट की उत्पत्ति नहीं होती, ऐसा तुझे समझ में आया या समझ में नहीं आया? इन टेम्परेरी (अस्थायी) चीज़ों की उत्पत्ति होती है, लेकिन परमानेन्ट वस्तु की उत्पत्ति होगी क्या? अतः अंदर जो आत्मा है, वह परमानेन्ट है। जब शरीर मर जाता है तब लोग कहते हैं न, कि आत्मा निकल गया। यहाँ से निकलने के बाद उसे दूसरा शरीर प्राप्त होता है। लेकिन शरीर बदलते रहते हैं और खुद परमानेन्ट रहता है। अतः आत्मा की उत्पत्ति का कारण ही नहीं रहा। उत्पन्न कब हो सकता है कि विनाशी हो, तब। आत्मा तो अविनाशी है, नित्य है।

इस जगत् में छः अनादि तत्त्व हैं, काल, आकाश, गति सहायक, स्थिति सहायक, जड़ और यह आत्मा। ये छः तत्त्व सनातन तत्त्व हैं। ये छः तत्त्व ही वास्तव में हमेशा के लिए हैं, परमानेन्ट हैं, नित्य हैं। जो वस्तु नित्य है वह अन्य वस्तुओं से बनी हुई नहीं हो सकती, स्वाभाविक होती है। वे तत्त्व निरंतर परिवर्तित होते ही रहते हैं और परिवर्तन के कारण ये सभी अवस्थाएँ दिखती हैं। अवस्थाओं को लोग ऐसा समझते हैं कि, 'यह मेरा स्वरूप है'। ये अवस्थाएँ विनाशी हैं और तत्त्व अविनाशी है। यानी आत्मा को उत्पन्न होने का रहता ही नहीं।

आत्मा यानी क्या?

प्रश्नकर्ता : आत्मा यानी क्या?

दादाश्री : आत्मा यानी चेतन।

प्रश्नकर्ता : तो चेतन यानी आत्मा और आत्मा यानी चेतन?

दादाश्री : नहीं, आत्मा तो सिर्फ शब्द ही है और चेतन भी सिर्फ शब्द है, परंतु यह लोगों को समझाने के लिए कहना पड़ता है। वर्ना, वह शब्द से परे हैं। लेकिन उँगलीनिर्देश तो करना पड़ेगा न! नहीं तो पहचानोगे नहीं। किस तरह से पहचानोगे? इसलिए अपने लोग कहते हैं न कि, तेरे आत्मा को खोज! आत्मा अर्थात् 'सेल्फ'! 'खुद कौन है' यह जानना, इसीको आत्मा कहते हैं! और उसी आत्मा को पहचानना है। 'रोंग बिलीफ' (गलत मान्यता) खत्म हो जाए और 'राइट बिलीफ' (सही मान्यता) बैठ जाए तब ऐसा हो पाएगा, नहीं तो किस तरह से हो पाएगा?

आत्मा, वह अविनाशी वस्तु

दादाश्री : आत्मा वस्तु होगा या अवस्तु?

प्रश्नकर्ता : अवस्तु।

दादाश्री : यह जो दिखता है, वह वस्तु है या अवस्तु?

प्रश्नकर्ता : आत्मा को तो देखा नहीं जा सकता न, इसलिए अवस्तु है, वस्तुओं को तो देखा जा सकता है न!

दादाश्री : नहीं। वस्तु और अवस्तु, वह आपको समझाता हूँ। हर एक वस्तु, जो अविनाशी होती है, उसे वस्तु कहते हैं और विनाशी होती है, उसे अवस्तु कहते हैं। आत्मा आत्मा रूप ही है। आत्मा वस्तु के रूप में अनंत गुणों का धाम है! और हर एक वस्तु खुद द्रव्य के रूप में गुण सहित और अवस्था सहित होती है। द्रव्य-गुण-पर्याय जिसमें होते हैं, उसे 'वस्तु' कहते हैं। वस्तु, वह अविनाशी कहलाती है। आत्मा भी खुद वस्तु है। उसका खुद का द्रव्य है, खुद के गुण हैं और खुद के पर्याय हैं। और वे पर्याय उत्पात, व्यय और ध्रुव सहित हैं। और इन आँखों से जो दिखता है, वह सब अवस्तु है, विनाशी है और आत्मा अविनाशी है, वस्तु है।

आत्मा का स्वरूप

प्रश्नकर्ता : आत्मा का वह स्वरूप कैसा दिखता है? तेजस्वी दिखता है या कुछ आकृति दिखती है?

दादाश्री : वह आकृति नहीं है, वैसे ही निराकृति भी नहीं है। यह आकृति वगैरह तो सब मनुष्य की कल्पनाएँ हैं, बुद्धिजन्य विषय हैं। आत्मा तो आत्मा ही है, प्रकाश स्वरूप है। हाँ, जिस प्रकाश को स्थल की भी ज़रूरत नहीं है, आधार की भी ज़रूरत नहीं है, ऐसा प्रकाश स्वरूप है आत्मा का। और पहाड़ों के भी आरपार जा सके ऐसा है, ऐसा वह आत्मा है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन आत्मा की किसी

आकार के रूप में कल्पना करनी हो तो कैसी कल्पना करें?

दादाश्री : उसके आकार की कल्पना करना योग्य नहीं है, उसके बजाय साकारी भगवान के पास बैठना चाहिए। साकारी भगवान, वही आत्मा का स्वरूप! जो देह सहित आत्मा ज्ञानी हैं, वे साकारी भगवान कहलाते हैं। उस तरह से कल्पना करना, संपूर्ण देहमंदिर सहित उनके दर्शन करने चाहिए। बाकी, आत्मा का आकार नहीं है। उसका निराकार स्वरूप 'ज्ञानी पुरुष' के पास से जानना पड़ेगा! और फिर उसका स्वरूप आपकी समझ में स्पष्ट बैठ जाएगा, फिट हो जाएगा, उसे फिर भूल नहीं पाओगे!

अत: आत्मा का आकार नहीं होता, वह निराकारी वस्तु है। फिर भी स्वभाव से आत्मा कैसा है? जिस देह में है, उस देह का जो आकार है, उस जैसे आकार का है। परंतु वहाँ पर सिद्धगति में अंतिम देह के आकार के एक तिहाई भाग जितना आकार कम हो जाता है। यानी दो तिहाई भाग के आकार का रहता है। यानी कि जो पाँचवे *आरे* (कालचक्र का एक भाग) का देह होता है और तीसरे *आरे* का जो देह होता है, उनमें बहुत ग़ज़ब का फर्क है। वह ऊँचाई अलग और यह ऊँचाई अलग। परंतु जिस चरमदेह से काम हुआ, उसी देह के अनुसार वहाँ पर, सिद्धगति में आकार होता है, परंतु आत्मा निराकार है।

प्रश्नकर्ता : जैसे हम हवा में हाथ घुमाएँ तो कुछ हाथ में नहीं आता, वैसे ही मोक्ष में जाएँ और हाथ ऐसे घुमाएँ तो हमसे कुछ टकराएगा क्या?

दादाश्री : नहीं। ऐसे हाथ घुमाएँगे तो कुछ भी हाथ में नहीं आएगा। अरे, यह अग्नि लेकर आत्मा के अंदर ऐसे घुमाएँ तब भी आत्मा जलेगा नहीं। ऐसे अंदर हाथ घुमाएँ तो भी आत्मा हाथ को स्पर्श नहीं करेगा, ऐसा आत्मा है। उस आत्मा में बर्फ़ घुमाएँ तब भी ठंडा नहीं होगा, उसमें तलवार घुमाओ तो वह कटेगा ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : फिर भी आकार तो होगा न?

दादाश्री : वह निराकारी आकार है, निरंजन-निराकारी आकार है। वह जैसा आपकी कल्पना में है, वैसा आकार नहीं है। उसका 'स्वाभाविक' आकार है।

आत्मा, देह में कहाँ पर नहीं है?

प्रश्नकर्ता : यह जो आत्मा है, उसका एक्स-रे में या किसी भी मशीन से फोटो भी नहीं आता।

दादाश्री : हाँ, आत्मा तो बहुत सूक्ष्म है, इसलिए वह हाथ में नहीं आ सकता न! केमरे में नहीं आता और आँखों से भी नहीं दिखता, दूरबीन से भी नहीं दिखता, किसी भी चीज़ से दिखे नहीं, आत्मा ऐसी सूक्ष्म वस्तु है।

प्रश्नकर्ता : इसलिए आश्चर्य होता है कि आत्मा कहाँ पर होगा?

दादाश्री : आत्मा के आरपार अंगारा चला जाए, फिर भी उसे अंगारा स्पर्श नहीं कर पाता, आत्मा इतना अधिक सूक्ष्म है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन इस शरीर में आत्मा का स्थान कौन-सा है?

दादाश्री : ऐसा है, आत्मा इस शरीर में कौन-सी जगह पर नहीं है? इस (बढ़े हुए) सिर के बाल में आत्मा नहीं है और ये नाखून हैं न, जितने नाखून काट देते हैं न, उतने भाग में आत्मा नहीं है। इस शरीर में बाकी सभी जगह पर आत्मा है। अत: कौन-से स्थान में आत्मा है ऐसा पूछने की ज़रूरत नहीं है, कौन-से स्थान में आत्मा नहीं है, ऐसा पूछना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : सामान्य रूप से, आत्मा तो दिमाग़ में रहता है न? और इन ज्ञानतंतुओं के कारण ही पिन चुभोने पर उसका पता चलता है न?

दादाश्री : नहीं, पूरे शरीर में आत्मा है। दिमाग़ में तो दिमाग़ होता है, वह तो मशीनरी है और वह तो सब अंदर की खबर देने वाला साधन है। आत्मा तो पूरे शरीर में उपस्थित है। यहाँ पैर में ज़रा-सा काँटा लगा कि तुरंत पता चल जाता है न?

यानी यह जो दिखता है न, वह फोटो ही आत्मा का है। सिर्फ इतना ही कि उसके ऊपर परत चढ़ गई हैं। वर्ना, फोटो वही का वही है। आत्मा का फोटो फिर वही का वही रहता है।

अत: इस शरीर में जहाँ-जहाँ पिन चुभोएँ और पता चलता है, वहाँ पर आत्मा है। रात को भी ज़रा-सी पिन चुभोएँ तो पता चल जाता है न? बाकी इस शरीर में जहाँ-जहाँ पिन चुभोने पर दु:ख होता है, उसे जो जानता है, वह आत्मा है। वर्ना आत्मा के चले जाने के बाद हम पिन चुभोते रहें, फिर भी चंदूलाल बोलेंगे नहीं, थोड़ा भी हिलेंगे-डुलेंगे नहीं।

प्रश्नकर्ता : आत्मा को दु:ख होता है, ऐसा हम कह सकते हैं?

दादाश्री : आत्मा को दु:ख नहीं होता। इस बर्फ़ पर अंगारे डालेंगे तो क्या बर्फ़ जल जाएगा?

प्रश्नकर्ता : बाल काटने से हमें दर्द नहीं होता, यानी वहाँ पर आत्मा नहीं है?

दादाश्री : नहीं।

प्रश्नकर्ता : और जहाँ पर दर्द होता है, वहाँ पर आत्मा है?

दादाश्री : हाँ, वहाँ पर आत्मा है।

प्रश्नकर्ता : तो यदि सुख-दु:ख का असर होता है, तो आत्मा संसारी हो गया?

दादाश्री : नहीं, आत्मा संसारी नहीं होता। आत्मा मूल स्वरूप में ही है। आपका माना हुआ आत्मा संसारी हो गया है, जिसे आप आत्मा मानते हो वह संसारी हो गया है और वह 'मिकेनिकल' है। इसीलिए पेट्रोल डालो तो चलता है, नहीं तो बंद हो जाता है। इस नाक को दबाकर रखें न तो आधे घंटे में या घंटे में 'मशीन' बंद हो जाती है। इसलिए लोग 'मिकेनिकल' आत्मा को आत्मा मानते हैं। मूल आत्मा को देखा नहीं, मूल आत्मा का एक शब्द भी सुना नहीं और 'मिकेनिकल' आत्मा को ही स्थिर करते हैं। परंतु 'मिकेनिकल' कभी भी स्थिर नहीं हो सकता।

भाजन अनुसार सिकुड़ना-फैलना होता है

प्रश्नकर्ता : आत्मा कट सकता है क्या?

दादाश्री : आत्मा कटता नहीं है, छेदा नहीं जा सकता, उसे कुछ भी नहीं हो सकता।

प्रश्नकर्ता : यहाँ से हाथ कट जाए तो फिर?

दादाश्री : आत्मा उतना सिकुड़ जाता है। आत्मा का स्वभाव सिकुड़ना और फैलना है, वह भी इस संसार अवस्था में। सिद्ध अवस्था में ऐसा नहीं है। संसार अवस्था में सिकुड़ना और फैलना दोनों हो सकते हैं। यह चींटी होती है न, तो उसमें भी आत्मा पूरा ही है और हाथी में भी एक ही पूरा आत्मा है। परंतु उसका फैलाव हो गया है। हाथ-पैर काटने पर आत्मा सिकुड़ जाता है और वह भी कुछ भाग कट जाए न, तो सिकुड़ जाता है, उसके बाद सिकुड़ता नहीं है।

प्रश्नकर्ता : देह को काट डालें, छेदन करें, फिर भी आत्मा दिखता नहीं है।

दादाश्री : आत्मा दिखे ऐसा है ही नहीं।

परंतु देह को काट डालें तो आत्मा निकल जाता है न? मनुष्य मर जाता है, तब कौन निकल जाता है?

प्रश्नकर्ता : आत्मा निकल जाता है।

दादाश्री : हाँ, निकल जाता है, फिर भी वह दिखें ऐसा नहीं है, लेकिन है ज़रूर। वह प्रकाश है, उजाले के रूप में है। यह सारा उसी का ही उजाला है। वह नहीं होगा तो फिर सब खत्म हो गया। वह निकल जाए, तो फिर देखा है न आपने? अर्थी देखी है? उसमें उजाला रहता है फिर?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तो उसमें से आत्मा निकल गया है। यानी आत्मा तो खुद ज्योति स्वरूप है।

मृत्यु यानी क्या? मृत्यु के बाद क्या?

प्रश्नकर्ता : मृत्यु क्या है?

दादाश्री : मृत्यु तो ऐसा है न, यह कमीज़ सिलवाई, तब कमीज़ का जन्म हुआ और जन्म हुआ तो मृत्यु हुए बगैर रहेगी ही नहीं। कोई भी चीज़ जन्म लेती है तो उसकी मृत्यु अवश्य होती है। और आत्मा अजन्मा-अमर है, उसकी मृत्यु होती ही नहीं। यानी जितनी चीज़ें जन्म लेती हैं, उनकी मृत्यु अवश्य होती हैं और मृत्यु है तो जन्म होगा। अत: जन्म के साथ मृत्यु जोइन्ट ही (जुड़ी हुई) है। जहाँ जन्म है, वहाँ पर मृत्यु अवश्य है ही।

प्रश्नकर्ता : परंतु मृत्यु, वह वस्तुस्थिति में क्या है?

दादाश्री : रात को सो जाते हो न, फिर 'कहाँ जाते हो?' सुबह कहाँ से आते हो आप?

प्रश्नकर्ता : ऐसा मालूम नहीं है।

दादाश्री : इसी तरह जन्म-मरण हैं, बीच के काल में सो जाता है, फिर जन्म के बाद वापस जागता है। मरने के बाद जन्म लेने तक, बीच के काल में सोता है। 'खुद' शाश्वत है, इसलिए जन्म-मरण खुद का होता ही नहीं है न! यह जन्म-मरण तो अवस्था के हैं। मनुष्य वही का वही रहता है, परंतु उसकी तीन अवस्थाएँ होती हैं या नहीं होतीं? बचपन की बाल अवस्था, फिर युवा अवस्था और वृद्धावस्था नहीं होती? ये अवस्थाएँ हैं, लेकिन 'खुद' तो एक ही है न? ये अवस्थाएँ शरीर की हैं। इसी प्रकार जन्म-मरण भी शरीर का है, आत्मा का जन्म-मरण नहीं है। आपके 'खुद के', 'सेल्फ' का जन्म-मरण नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो मृत्यु किसलिए आती है?

दादाश्री : वह तो ऐसा है, जब जन्म होता है, तब ये मन-वचन-काया की जो तीन 'बेटरियाँ' हैं, वे गर्भ में से इफेक्ट देती हैं। जब इफेक्ट पूरा हो जाता है, उस 'बेटरी' से हिसाब पूरा हो जाता है, तब तक वे बेटरियाँ रहती हैं। और फिर जब वे खत्म हो जाती हैं, तब उसे 'मृत्यु' कहते हैं। परंतु तब वापस अगले जन्म के लिए नयी बेटरियाँ अंदर चार्ज होती ही रहती हैं और पुरानी बेटरियाँ डिस्चार्ज होती रहती हैं। इस तरह चार्ज-डिस्चार्ज होता ही रहता है। क्योंकि 'उसे' 'रोंग बिलीफ' है। इसलिए कॉज़ेज़ उत्पन्न होते हैं। जब तक 'रोंग बिलीफ' हैं, तब तक राग-द्वेष हैं और कॉज़ेज़ उत्पन्न होते हैं। और यह 'रोंग बिलीफ' बदल जाए और 'राइट बिलीफ' बैठे तो राग-द्वेष और कॉज़ेज़ उत्पन्न नहीं होंगे।

प्रश्नकर्ता : जब शरीर का नाश होता है, तब आत्मा कहाँ जाता है?

दादाश्री : ऐसा है न, आत्मा इटर्नल (शाश्वत) है, परमानेन्ट है, नित्य है। उसे कहीं

भी जाना-आना होता ही नहीं है। जब इस शरीर का नाश होता है, तब आत्मा को कहाँ जाना है, वह उसके खुद के अधिकार में नहीं है। वह भी साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स के ताबे में है। यानी जहाँ पर एविडेन्स ले जाएँ, वहाँ पर उसे जाना पड़ता है। इसमें, 'परमानेन्ट' वस्तु सिर्फ आत्मा ही है, बाकी सबकुछ टेम्परेरी है। मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार सबकुछ ही टेम्परेरी है। और आत्मा तो ऐसा है कि, वह इस शरीर से बिल्कुल अलग है। जैसे यह कपड़ा और मेरी देह अलग ही है न, उतने ही ये देह और आत्मा अलग हैं, बिल्कुल अलग हैं।

कुदरत के कितने ही 'एडजस्टमेन्ट्स'

प्रश्नकर्ता : मृत्यु के समय जब आत्मा एक देह छोड़ रहा हो, तब वह दूसरी देह में जाने से पहले कहाँ, कितने समय तक और किस तरह से रहता है? दूसरी देह में जाने में हर एक जीव को कितना समय लगता है?

दादाश्री : उसे बिल्कुल भी समय नहीं लगता। यहाँ इस देह में भी होता है और वहाँ योनि में प्रवेश करना शुरू हो जाता है। मरने वाला यहाँ बड़ौदा में और योनि वहाँ दिल्ली में होती है, तो आत्मा योनि में भी होता है और यहाँ इस देह में भी होता है। यानी कि इसमें टाइम ही नहीं लगता। देह के बगैर थोड़ी देर के लिए भी अलग नहीं रह सकता है।

यहाँ पर देह छूटने वाली होती है, तब वहाँ पर वीर्य और रज का संयोग होता है उस घड़ी। वह सब इकट्ठा हो जाए, तब यहाँ से जाता है, वर्ना वह यहाँ से, जाता ही नहीं। क्योंकि यदि यहाँ से चला जाएगा तो वह वहाँ खाएगा क्या? वहाँ योनि में जाएगा लेकिन खुराक क्या खाएगा? पुरुष का वीर्य और माता का रज, वे दोनों ही होते हैं, वहाँ जाते ही भूख के मारे उनको वह सारा ही खा जाता है और खाकर फिर पिंड बनता है। बोलो अब, ये सब साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स हैं न?

यानी यहाँ से निकलने में देर नहीं लगती। अब वहाँ पर यदि ऐसा टाइम सेट नहीं हुआ हो न, तब तक यहाँ पर इस देह में उं..उं..उं.. करता रहता है। 'क्यों निकलते नहीं हो? जल्दी जाओ न' यदि ऐसा कहें, तब कहेगा, 'नहीं अभी तैयारी नहीं हुई है वहाँ पर!' इसलिए अंतिम घड़ी में उं..उं..उं.. करता है न? वहाँ पर 'एडजस्ट' हो जाने के बाद यहाँ से निकलता है। लेकिन जब निकलता है, तब वहाँ पर सब पद्धतिपूर्वक ही होता है।

भ्रांति से ही होते हैं जन्म-मरण

प्रश्नकर्ता : तो ऐसा ही हुआ न कि जब दूसरा जन्म होना होता है, तब वही का वही आत्मा वहाँ पर जाता है?

दादाश्री : हाँ, वही आत्मा, अन्य कोई नहीं।

प्रश्नकर्ता : तो फिर आत्मा का भी जन्म हुआ, ऐसा कह सकते हैं न?

दादाश्री : नहीं, आत्मा का जन्म होता ही नहीं। जन्म लेने का आत्मा का स्वभाव ही नहीं है। यह जन्म भी *पुद्गल* (अहंकार) का होता है और मरण भी *पुद्गल* का होता है। परंतु यह 'उसकी' मान्यता है कि 'यह मैं हूँ' इसलिए उसे साथ में घिसटना पड़ता है। बाकी, इसमें *पुद्गल* का जन्म और *पुद्गल* का ही मरण है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन *पुद्गल* के साथ आत्मा होता है न?

दादाश्री : यह तो भ्रांति है, इसी वजह से *पुद्गल* साथ में है। वर्ना भ्रांति जाने के बाद

पुद्गल और आत्मा का कोई लेना-देना नहीं रहता न! भ्रांति जाने के बाद तो जितना चार्ज हो चुका है, उतना डिस्चार्ज हो जाता है इसलिए फिर खत्म हो जाता है, फिर नया चार्ज नहीं होता।

ये सभी कर्म जो अभी हो रहे हैं न, उन कर्मों का यदि 'मैं मालिक हूँ' ऐसा कहे, 'मैंने किया' ऐसा कहे, तो नया हिसाब बंधता है और 'यह व्यवस्थित ने किया' और 'मैं तो शुद्धात्मा हूँ' ऐसा समझ में आ जाए तो कर्मों के साथ उसका लेना-देना नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तब तो फिर जन्म ही नहीं होगा?

दादाश्री : हाँ, फिर मुक्त हो जाएगा। परंतु इस काल में अभी संपूर्ण डिस्चार्ज नहीं हो सकता। यानी धक्का इतना ज़ोरदार है कि एक या दो जन्म और होते हैं। कर्ता भाव मिटा यानी बस, खत्म हो गया, कर्म बंधने रुक जाते हैं।

अब जन्म-मरण का कारण एक ही है, कि 'खुद कौन है', इसका भान नहीं है वह। सिर्फ यही एक कारण है। जैनों ने कहा है कि राग-द्वेष और अज्ञान से बंधा हुआ है और वेदांत ने भी कहा है कि मल, विक्षेप और अज्ञान से बंधा हुआ है। दोनों अज्ञान को स्वीकार करते हैं। तो अज्ञान से बंधा हुआ है, और ज्ञान से छूटेगा। खुद को खुद का ही ज्ञान हो जाए, भान हो जाए कि छूट जाएगा।

सूक्ष्म शरीर से संबंध कब तक?

प्रश्नकर्ता : एक जीव दूसरे खोल में जाता है। वहाँ पर साथ में पंचेन्द्रियाँ और मन वगैरह हर एक जीव लेकर जाता है?

दादाश्री : नहीं, नहीं, कुछ भी नहीं। इन्द्रियाँ तो सभी एक्ज़ोस्ट होकर खत्म हो गई। इन्द्रियाँ तो मर गई। और कारण शरीर में से फिर से नयी उत्पन्न होती हैं। यानी कि उसके साथ में इन्द्रिय वगैरह कुछ भी नहीं जाता। सिर्फ ये क्रोध-मान-माया-लोभ ही जाते हैं। कारण शरीर में क्रोध-मान-माया-लोभ सबकुछ ही आ गया। और सूक्ष्म शरीर, वह कैसा होता है? जब तक मोक्ष में नहीं जाता, तब तक साथ में ही रहता है। भले ही कहीं भी जन्म हो, परंतु यह सूक्ष्म शरीर तो साथ में ही रहता है।

यानी देह को छोड़कर आत्मा अकेला नहीं जाता है। आत्मा के साथ में फिर सभी कर्म, कारण कर्म-कारण देह कहते हैं उसे और तीसरा इलेक्ट्रिकल बॉडी, ये तीनों साथ में निकलते हैं। जब तक यह संसार है, तब तक हर एक जीव में यह इलेक्ट्रिकल बॉडी होती ही है। कारण शरीर बना कि 'इलेक्ट्रिकल बॉडी' साथ में होती ही है। इलेक्ट्रिकल बॉडी हर एक जीव में सामान्य भाव से होती ही है और उसके आधार पर अपना सब चलता है। भोजन खा लेते हैं, उसे पचाने का काम यह इलेक्ट्रिकल बॉडी करती है। ये खून वगैरह सब बनता है, खून शरीर में ऊपर चढ़ाती है, नीचे उतारती है, अंदर ये सारे काम करती है। आँखों से जो दिखता है, वह सारी लाइट इलेक्ट्रिकल बॉडी के कारण ही है। ये क्रोध-मान-माया-लोभ, ये भी इस इलेक्ट्रिकल बॉडी के कारण होते हैं। आत्मा में क्रोध-मान-माया-लोभ हैं ही नहीं। यह गुस्सा भी, ये सब इलेक्ट्रिकल बॉडी के शॉक हैं।

प्रश्नकर्ता : तो फिर चार्ज होने में इलेक्ट्रिकल बॉडी काम करती होगी न?

दादाश्री : इलेक्ट्रिकल बॉडी हो तभी चार्ज होता है, वर्ना यदि यह इलेक्ट्रिकल बॉडी नहीं होगी तो यह कुछ भी चलेगा ही नहीं। इलेक्ट्रिकल बॉडी हो और आत्मा नहीं हो, तब भी कुछ नहीं चलेगा। ये सब समुच्चय कॉज़ेज़ हैं।

प्रश्नकर्ता : जब जीव मर जाता है, तब तैजस शरीर किस तरह से उसके साथ में जाता है?

दादाश्री : तैजस शरीर कब तक रहता है? कर्म की पूंजी हो तब तक। कर्म की पूंजी खत्म हो गई कि तैजस शरीर (साथ में) नहीं आता। अर्थात् वह इस पूरे भवपर्यंत अंत तक रहता है। हर एक जीवमात्र में, पेड़ में, सभी में तैजस शरीर होता है। यह तैजस शरीर नहीं हो तो उसकी गाड़ी किस तरह चलेगी? तैजस शरीर को अंग्रेज़ी में कहना हो तो 'इलेक्ट्रिकल बॉडी' कह सकते हैं। और 'इलेक्ट्रिसिटी' के बिना तो घर में चल ही नहीं सकेगा और आँखों से दिखेगा भी नहीं। 'इलेक्ट्रिसिटी' बंद हो गई कि हो चुका, सबकुछ खत्म हो जाएगा!

ऐसा है न, इस पानी के नीचे अगर स्टोव जलाओ, तो एक सेर पानी होगा, फिर भी खत्म हो जाएगा न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : यह पानी, वह स्थूल स्वरूप है और जो उड़ जाता है, वह सूक्ष्म स्वरूप है। उसी प्रकार यह देह जो स्थूल स्वरूप है, वह हमें दिखता है और वह सूक्ष्म स्वरूप हमें दिखता नहीं है। परंतु वह सूक्ष्म शरीर भी इसके जैसा ही होता है, अन्य कोई फर्क है ही नहीं। सूक्ष्म शरीर का मतलब ही इलेक्ट्रिकल बॉडी है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन जिस समय जीव जाता है, उस समय कार्मण शरीर और तैजस शरीर उसके साथ में किस तरह से जाते हैं? अन्य कुछ साथ में क्यों नहीं जाता?

दादाश्री : जो पानी हमने जलाया न, उस पानी में ही 'हाइड्रोजन' और 'ऑक्सीजन' दोनों साथ में निकलते हैं और बाद में वे भी अलग हो जाते हैं। लेकिन जब उड़ते हैं, तब दोनों साथ में उड़ते हैं। लेकिन बाद में अलग होते हैं और फिर से इकट्ठे होते हैं। ये हिसाब हैं। कर्म के हिसाब से इलेक्ट्रिकल बॉडी चिपकी हुई ही रहती है। यानी अन्य कोई मिलावट नहीं होती। यह इलेक्ट्रिकल बॉडी संपूर्ण भवपर्यंत एक ही रहती है और उसमें बाहर का और कुछ भी उसे स्पर्श नहीं करता है। जैसे कि यह शरीर, दूसरे शरीर को घुसने नहीं देता, उसी प्रकार इस सूक्ष्म शरीर का है। यह स्थूल शरीर आँखों से दिखता है और सूक्ष्म शरीर आँखों से नहीं दिखे, ऐसा होता है और कोई डिफरन्स नहीं है। इसमें आकार वगैरह एक जैसा, सिर्फ इतना ही कि यह स्थूल शरीर दिखता है और वह सूक्ष्म शरीर नहीं दिखता, इतना ही। यानी इसमें कुछ भी मिश्रित नहीं हो सकता। यह सूक्ष्म शरीर किसी और को नहीं मिलता। इसमें भी ममता है न, उसी प्रकार से वहाँ पर सूक्ष्म देह में भी ममता है, सभी कुछ है।

ऐसा है न, जब तक संसार अवस्था है तब तक सूक्ष्म शरीर साथ में रहता ही है। संसार अवस्था अर्थात् भ्रांति की अवस्था। जब तक वह है तब तक सूक्ष्म शरीर रहता है।

प्रश्नकर्ता : तो सूक्ष्म देह में आत्मा स्वतंत्र है या बंधा हुआ है?

दादाश्री : स्वतंत्र ही है, बंधा हुआ नहीं है। व्यवहार आत्मा बंधा हुआ है और यथार्थ (मूल) आत्मा बंधा हुआ नहीं है। जिसका आप व्यवहार में उपयोग करते हो, वह आत्मा बंधा हुआ है।

प्रश्नकर्ता : यह जो फिर से जन्म लेता है, वह सूक्ष्म देह लेता है न?

दादाश्री : हाँ, तो फिर आप ऐसा कहो न, कि यह अहंकार जन्म लेता है! सूक्ष्म देह को तो पहचानते ही नहीं, कभी भी सूक्ष्म देह को तो

देखा ही नहीं। सूक्ष्म देह शब्द बोलना सीख गए, वह तो किताब में पढ़कर। अत: अहंकार ही जन्म लेता है, ऐसा कहो न! अहंकार को पहचानते हो या नहीं पहचानते? अहंकार ही देह धारण करता है बार-बार। एक तो व्यवहार आत्मा है और एक यथार्थ आत्मा है। यथार्थ आत्मा बंधा हुआ नहीं है, वह शुद्ध ही है।

यानी अहंकार की ही गड़बड़ है यह। अहंकार चला जाए तो मोक्ष हो जाएगा। बस, इतनी छोटी-सी बात समझ में आ जाएगी न?

जिसे सूक्ष्म देह कहते हो वह, वही दूसरे जन्म में जाती है। यह प्रमाण तो आपको समझ में आता है न? बाकी सूक्ष्म को तो किस तरह से पहचानोगे? सूक्ष्म वस्तु अलग है, उसे तो 'ज्ञानी' ही जानते हैं। यह तो लोग किताब में पढ़कर 'सूक्ष्म देह, सूक्ष्म देह' बोलते हैं। बाकी स्थूल को ही नहीं पहचानता, वह सूक्ष्म को किस तरह से पहचानेगा?

आत्मा कैसे पहचाना जा सकता है?

प्रश्नकर्ता : आत्मा देखा जा सकता है या कल्पना ही है?

दादाश्री : हमें हवा दिखती नहीं हैं, फिर भी आपको पता चलता है न, कि हवा है? या नहीं पता चलता? इत्र की खुशबू आती है, लेकिन वह खुशबू दिखती है क्या? फिर भी हमें इस बात का पक्का पता चलता है न, कि यह 'इत्र है'? इसी प्रकार 'आत्मा है' उसका हमें यकीन होता है! जैसे खुशबू पर से इत्र को पहचाना जा सकता है, उसी प्रकार आत्मा को भी उसके सुख पर से पहचाना जा सकता है। फिर यह पूरा जगत् 'जैसा है वैसा' दिखता है। उस पर से प्रमाणित हो जाता है कि आत्मा के अनंत गुण हैं। आत्मा त्रिकाली वस्तु है और अनंत सुख का धाम है। आत्मा खुद ही परमात्मा है, परंतु 'खुद' को 'इसका' भान होना चाहिए। एक बार भान हो गया कि फिर, सभी गुण प्रकट हो जाएँगे। अनंत भेद से (अनंत रीति से) आत्मा हैं, अनंत गुणधाम हैं! उसका एक भी गुण जाना नहीं है आपने अभी तक।

आत्मा के मुख्य गुण

प्रश्नकर्ता : आत्मा को पहचानने का लक्षण क्या है?

दादाश्री : पहचानना तो अविनाशी पद है वह, अनंत सुखधाम है। अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत सुख। खुद के सुख को ढूँढने बाहर नहीं जाना पड़ता और दु:ख तो है ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : आत्मा को अनंत गुणधाम कहा है, तो वे गुण कौन-कौन से हैं?

दादाश्री : आत्मा के मुख्य दो गुण हैं : ज्ञान और दर्शन। बाकी तो अपार गुण हैं। अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत शक्ति और अनंत सुख, ये चार गुण बड़े-बड़े, ज़बरदस्त।

मूल आत्मा शुद्ध ही है। शुद्ध ज्ञान के अलावा और कुछ भी नहीं है। लेकिन शुद्ध ज्ञान किसे कहेंगे? कौन से थर्मामीटर पर शुद्ध ज्ञान कहा जाएगा? तो कहते हैं, जिस ज्ञान से राग-द्वेष और भय नहीं होते, वह ज्ञान शुद्ध ज्ञान और शुद्ध ज्ञान, परम ज्योति स्वरूप, वही परमात्मा है। परमात्मा कोई स्थूल चीज़ नहीं है, ज्ञान स्वरूप है, एब्सल्यूट ज्ञान मात्र है।

हाँलाकि, पापड़ को तोड़ने की भी शक्ति नहीं है

प्रश्नकर्ता : आत्मा में अनंत शक्तियाँ हैं क्या?

दादाश्री : हाँ, लेकिन वे शक्तियाँ 'ज्ञानी

पुरुष' के माध्यम से प्रकट होनी चाहिए। जैसे कि जब आप स्कूल में गए थे, तब वहाँ पर सिखाया था न? आपका ज्ञान तो था ही आपके अंदर, लेकिन वे प्रकट कर देते हैं। उसी प्रकार 'ज्ञानी पुरुष' के पास आपकी सभी शक्तियाँ प्रकट होती हैं। अनंत शक्तियाँ हैं, लेकिन वे शक्तियाँ ऐसे के ऐसे 'अन्डरमाइन' (दबी हुई) पड़ी हैं। वे शक्तियाँ हम खुली कर देते हैं। जबरदस्त शक्तियाँ (दबी हुई) हैं! वे सिर्फ आपमें अकेले में नहीं हैं, हर एक जीवमात्र में ऐसी शक्तियाँ हैं, लेकिन क्या करें? ये तो लेयर्स पर लेयर्स (परतें) डाले हुए हैं सारे!

प्रश्नकर्ता : आत्मा की शक्ति और शारीरिक शक्ति, इन दोनों में कोई संबंध है क्या?

दादाश्री : इन दोनों की शक्तियाँ अलग ही हैं।

प्रश्नकर्ता : वे दोनों एक-दूसरे पर असर डालते हैं?

दादाश्री : डालते ही हैं न! इस शारीरिक शक्ति के कारण तो वह आत्मा की शक्ति बंद हो जाती है। शारीरिक शक्ति अधिक हो तो पाशवता बढ़ती है।

प्रश्नकर्ता : और आत्मा की शक्ति अधिक हो तो?

दादाश्री : पाशवता कम होती है और मनुष्यपन उत्पन्न होता है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर आत्मा की शक्ति को प्राप्त करने के लिए मनुष्य को क्या प्रयत्न करना चाहिए?

दादाश्री : आत्मा की शक्ति अंदर है ही। आत्मा की शक्ति, वह तो परमात्मापन की शक्ति है। बाकी उस परमात्मा में एक सेका हुआ पापड़ तोड़ने की भी शक्ति नहीं है और यों अनंत शक्तियों के वे मालिक हैं!

प्रश्नकर्ता : हाँ, पापड़ तोड़ने की शक्ति नहीं है लेकिन आप एक तरफ ऐसा कहते हैं कि आत्मा में अनंत शक्तियाँ हैं, यानी दो शक्तियाँ हुईं?

दादाश्री : हाँ, शक्ति दो प्रकार की हैं। एक शक्ति है, ज्ञान-दर्शन, उसमें *लागणियाँ* (सुख-दुःख की अनुभूति, विकास) होती हैं और दूसरी है, कार्य शक्ति, उसमें *लागणियाँ* नहीं होतीं। अनंत शक्तियाँ जो हैं वे, ये शक्तियाँ, खुद की शक्तियाँ तो अपार हैं लेकिन वे शक्तियाँ ऐसी नहीं हैं। जबकि यह कहता है कि, 'मैं पहुँच गया, मेरी शक्ति है यह तो'। अरे, यह तेरी शक्ति है ही नहीं, यह तो रिज़ल्ट है।

नहीं है वह मिकेनिकल शक्ति

प्रश्नकर्ता : यदि आत्मा-परमात्मा कुछ कर ही नहीं सकता तो हम उसे 'अनंत शक्ति वाला' क्यों कहते हैं?

दादाश्री : अनंत शक्ति वाला आत्मा-परमात्मा हैं लेकिन यह आप जैसी मानते हो उसमें वैसी मिकेनिकल शक्ति नहीं है। मिकेनिकल शक्ति पावर से उत्पन्न हुई है और यह सारी मिकेनिकल शक्ति है। आप अंदर भोजन डालते हो तो यह मशीन चलती है। अगर भोजन नहीं डालें, हवा नहीं भरें तो मशीन बंद हो जाती है।

शक्ति दो प्रकार की होती हैं : एक मशीनरी बनाने की शक्ति जबकि यह कुछ नहीं करता और शक्ति अपार हैं! ईश्वर की शक्ति अपार हैं लेकिन कुछ करने की नहीं है। उसकी उपस्थिति से सब चलता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, आत्मा यदि अक्रिय है तो फिर इतनी सारी शक्ति आई कहाँ से उसमें?

दादाश्री : अनंत शक्तियों का मालिक है। अक्रिय है इसलिए ऐसी क्रिया नहीं करता। यह मेहनत वाली क्रिया मिकेनिकल है, मिकेनिकल नहीं करता है वह। लेकिन उसकी ज्ञान क्रिया ज़बरदस्त होती है, दर्शन क्रिया ज़बरदस्त होती है। अनंत शक्तियों का मालिक, ज़बरदस्त! मिकेनिकल शक्ति नहीं। यह मशीनरी चलती है और यह सब लेने-देने की जो मिकेनिकल शक्ति है, वह सारी *पुद्गल* की हैं, परमाणुओं की शक्ति हैं।

आत्मा की अनंत ज्ञान शक्तियाँ हैं, एकाध-दो ज्ञान शक्तियाँ हैं, ऐसा नहीं है। ये अनंत ज्ञान शक्तियाँ हैं, उसके आधार पर तो ज्योतिष वाले का ज्ञान, वकालत का ज्ञान, डॉक्टरी ज्ञान, ये सारा ज्ञान अनावृत हुआ है। हर एक के अलग-अलग 'सब्जेक्ट्स' (विषय) होते हैं, वे सभी ज्ञान अनावृत हो जाएँ, इतनी सारी ज्ञान शक्तियाँ हैं! यानी आत्मा अनंत शक्ति का मालिक है! अनंत ज्ञान शक्ति हैं और अनंत वीर्य शक्तियाँ हैं! बहुत ग़ज़ब की शक्ति वाले हैं, ऐसे ये परमात्मा हैं!

पुद्गल की शक्ति ने भगवान को भी उलझाया

प्रश्नकर्ता : आत्मा की शक्ति और *पुद्गल* की शक्ति में क्या अंतर है?

दादाश्री : *पुद्गल* में भी अनंत शक्तियाँ हैं। वे रूपी हैं और सक्रिय हैं और वह *पुद्गल* कुछ पीछे रह जाए ऐसा नहीं है। *पुद्गल* ने भगवान को रोका है। उससे भगवान उसमें उलझ गए हैं! यह कोशेटो, ये मकड़ी खुद के आसपास बुनती है न, तो मकड़ी जाल तैयार करती है और फिर भीतर उलझ जाती है, उसके जैसी स्थिति है। यह *पुद्गल* की करामात है।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा है कि *पुद्गल* और आत्मा दोनों की अनंत शक्तियाँ हैं, साथ ही यह भी समझाया है कि दोनों की शक्तियाँ अलग और निराली हैं, एक-दूसरे से कोई लेना-देना नहीं है, तो फिर *पुद्गल* ने भगवान को कैसे रोका है?

दादाश्री : *पुद्गल* में 'मैं ही हूँ', ऐसा मानता था इसलिए उसकी शक्तियाँ *पुद्गल* में चली गई और वह *पुद्गल* शक्तिशाली हो गया। और अब जब से 'मैं आत्मा हूँ', उसका *लक्ष* (जागृति) बैठ गया, तब से *पुद्गल* से अलग हो गया। लेकिन शक्तिवान हुए *पुद्गल* को नरम होने में देर लगती है और अलग हो चुके आत्मा को पूर्णता तक पहुँचने में भी समय लगता है।

किसे किसका बंधन?

प्रश्नकर्ता : आत्मा *पुद्गल* से चिपका हुआ है या *पुद्गल* आत्मा से चिपका है?

दादाश्री : ऐसा है न, कोई किसी से चिपका हुआ है ही नहीं, सबकुछ नैमित्तिक है। यह तो लोग व्यवहार में कहते हैं कि, 'आत्मा चिपक गया है'। इसीलिए तो लोग ऐसा कहते हैं कि, 'इस पेड़ को तूने पकड़ा है, तू छोड़ दे', लेकिन ऐसे छोड़ने से क्या छूटता होगा? यह तो साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ऐसा दिखता है कि आत्मा इस *पुद्गल* से चिपका हुआ है। आत्मा *पुद्गल* में तन्मयाकार हो जाता है, इसलिए ऐसा हुआ है।

दादाश्री : वह तो अनिवार्यत: होना ही पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : आत्मा को यह अनिवार्यता क्यों हुई? किसने अनिवार्य किया?

दादाश्री : यह सब तो ऐसा है न, आत्मा चैतन्य है और यह *पुद्गल* जड़ है, इन दोनों को साथ में रखा तो विशेष भाव उत्पन्न हो जाता है। कोई कुछ भी नहीं करता, लेकिन दोनों के इकट्ठे

होने से विशेष भाव उत्पन्न होता है और विशेष भाव होने से संसार शुरू हो जाता है। फिर आत्मा जब वापस मूल भाव में आ जाता है और खुद जान लेता है कि 'मैं कौन हूँ' तब वह छूट जाता है। उसके बाद *पुद्गल* छूट जाता है।

प्रश्नकर्ता : दोनों पास-पास में किस तरह से आए?

दादाश्री : वही यह 'एविडेन्स' है न! व्यवहार में प्रवेश करते ही यह सब मिल जाता है। यहाँ व्यवहार पूरा संयोगों से भरा हुआ है, और जहाँ संयोग नहीं होते, वहाँ जाना है, सिद्धपद में जाना है। इसके लिए 'शास्त्र', 'ज्ञानी पुरुष', ये सभी साधन मिल जाते हैं, तब वह खुद का स्वरूप समझता है, तब से ही वह मुक्त होने लगता है। फिर एक जन्म, दो जन्म, नहीं तो पंद्रह जन्मों में भी उसका हल आ जाता है!

यानी चेतन खुद *पुद्गल* के चक्र में पड़ा ही नहीं है। यह जो ऐसा लगता है कि पड़ा हुआ है, वह भी भ्रांति है। यह भ्रांति दूर हो जाए तो अलग ही हैं।

पूरे संसारकाल में आत्मा, आत्मा ही रहा है लेकिन वह तो अंदर अहंकार खड़ा हो जाता है, वही सबकुछ वेदता है। *शाता* (सुख परिणाम) का वेदन करता है और *अशाता* (दुःख परिणाम) का भी वेदन करता है। इस वेदन से ही उत्पन्न हो गया है यह सब। 'रोंग बिलीफ' उत्पन्न हो गई है। 'आत्मा बदला नहीं है, आत्मा बिगड़ा नहीं है। यहाँ पर हम उसकी भ्रांति को खत्म कर देते हैं और आत्मा तो संपूर्ण ही दे देते हैं।'

आत्मा-पुद्गल को जानते हैं ज्ञानी पुरुष

प्रश्नकर्ता : *पुद्गल* और आत्मा जब अलग होते हैं, तब मुक्त होते हैं न?

दादाश्री : *पुद्गल* को कुछ लेना-देना नहीं है। जब आत्मा खुद के स्वरूप को समझ ले, उसका भान हो जाए, तब प्रकट होता है, और उसे चख लिया तो काम हो जाता है। यानी कि आत्मा का और *पुद्गल* का लेना-देना नहीं है। ये 'चंदूभाई' तो आत्मा से बाहर हैं। आत्मा से तो कितने ही दूर गए, तब 'मैं चंदूभाई हूँ' ऐसा बोलते हैं।

इसमें दो ही चीज़ें हैं, आत्मा और *पुद्गल*। जिसने आत्मा जाना हो वह *पुद्गल* को समझ गया और *पुद्गल* को जान ले तो आत्मा को समझ गया। लेकिन *पुद्गल* को समझ जाए ऐसा हो नहीं सकता, वह बहुत आसान चीज़ नहीं है। आत्मा को जानना, उसे 'ज्ञानी पुरुष' के आधार से जाना जा सकता है। जो संपूर्ण *पुद्गल* को जान लें, वह चेतन को जान लेता है या फिर संपूर्ण चेतन को जो जानता है, वह *पुद्गल* को जान लेता है। जैसे यदि गेहूँ को जान लें, तो कंकड़ को पहचान सकता है और कंकड़ को जान ले तो गेहूँ को पहचान सकता है, ऐसा है।

आत्मा शुद्ध ही, 'बिलीफें' ही 'रोंग'

प्रश्नकर्ता : आत्मा उसके मूल स्वभाव में तो शुद्ध है, तो उसे ये सब कषाय किस तरह से लग गए होंगे और कर्म किस तरह से बंधे?

दादाश्री : यह 'साइन्स' (विज्ञान) है! हम यहाँ पर लोहा रख दें और यदि वह लोहा जीवित होता न तो कहता कि, 'मुझे ज़ंग नहीं लगना'। लेकिन 'साइन्स' का नियम है, कि यदि उसे अन्य संयोगों का स्पर्श होगा तो उसे ज़ंग लगे बिना रहेगा ही नहीं। उसी प्रकार से आत्मा मूल स्वभाव से तो शुद्ध ही है, परंतु उसे इन संयोगों के दबाव से ज़ंग लग गया है।

प्रश्नकर्ता : आत्मा अभी कर्म से आवृत

हैं, परंतु आत्मा उन कर्मों को खपा दें, तो फिर उसे ज़ंग लगेगा क्या?

दादाश्री : ऐसा है न, जब तक खुद स्वभान में नहीं आता, तब तक ज़ंग लगता रहता है, निरंतर ज़ंग लगता ही रहता है। खुद का भान गया, खुद आरोपित भाव में है, इसलिए ज़ंग लगता ही रहता है। 'मैं चंदूलाल हूँ' यह आरोपित भाव है, इसलिए निरंतर ज़ंग लगता रहता है। वह आरोपित भाव गया और 'स्वभाव' में आ जाए, यानी कि खुद के स्वरूप में आ जाए, क्षेत्रज्ञदशा में आ जाए, तो फिर उसे ज़ंग नहीं लगेगा!

प्रश्नकर्ता : शुरूआत में आत्मा मूल पदार्थ के रूप में क्या होगा कि जिससे यह ज़ंग लगा?

दादाश्री : ये सभी तत्त्व लोक में हैं, और लोक में जब तक हैं तब तक दूसरे तत्त्वों का असर होता रहेगा। इसे 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' कहते हैं। आत्मा जब लोक से परे जाएगा, सिद्धगति में जाएगा, तब वहाँ पर उसे ज़ंग नहीं लगेगा।

ऐसा है न, अन्य कोई कर्म लगे नहीं हैं, भान खोया है, वे ही कर्म लगे हुए हैं। बाकी खुद शुद्ध ही है। अभी भी आपका आत्मा शुद्ध ही है। हर एक का आत्मा शुद्ध ही है, परंतु यह जो बाह्य रूप खड़ा हो गया है, उस रूप में खुद को 'रोंग बिलीफ' खड़ी हो गई हैं। जन्म से ही खुद को यहाँ पर उस रूप में अज्ञान प्रदान किया जाता है। संसार है, इसलिए जब से बच्चे का जन्म होता है, तब से ही उसे अज्ञान का प्रदान किया जाता है कि 'बेटा आया, बेटा, बेटा' कहते हैं। फिर चंदू नाम रखा जाए तो लोग फिर उसे 'चंदू, चंदू' कहते हैं, तब खुद फिर मान लेता है कि 'मैं चंदू हूँ'। फिर उसे पापा की पहचान करवाते हैं, मम्मी की पहचान करवाते हैं, सारा अज्ञान का ही प्रदान किया जाता है। 'तू चंदू, ये तेरी मम्मी, ये तेरे पापा' ऐसे पहचान करवाते हैं, इसलिए उसे 'रोंग बिलीफ' बैठ गई है, वह उखड़ती ही नहीं। उस 'रोंग बिलीफ' को जब 'ज्ञानी पुरुष' तोड़ देते हैं, तब 'राइट बिलीफ' बैठती है, और तब हल आ जाता है! यानी आत्मा तो शुद्ध ही है, यह तो सिर्फ दृष्टिफेर ही है!

प्रश्नकर्ता : लेकिन इसकी शुरूआत किस तरह से हुई?

दादाश्री : यह तो अविनाशी वस्तुओं के इकट्ठे होने से ये सब अवस्थाएँ उत्पन्न हो गई हैं। यह संसार अर्थात् समसरण मार्ग और समसरण अर्थात् निरंतर परिवर्तन होता ही रहता है। इस परिवर्तन से आपको अपने लिए ऐसा लगता है, कि आपका आत्मा अशुद्ध ही है, लेकिन मुझे आपका आत्मा शुद्ध ही दिखता है। सिर्फ आपको 'रोंग बिलीफें' बैठी हैं, इसलिए आप अशुद्ध मानते हैं। इन 'रोंग बिलीफों' को मैं 'फ्रेक्चर' कर दूँ और आपको 'राइट बिलीफ' बैठा दूँ, तब फिर आपको भी शुद्ध दिखेगा।

यह तो सिर्फ मिथ्या दर्शन उत्पन्न हो गया है, जहाँ पर सुख नहीं है वहाँ पर सुख की मान्यता उत्पन्न हो गई है। हम जब ज्ञान देते हैं, उसके बाद फिर उसे सही दिशा में रास्ता मिल जाता है। रास्ता मिल जाता है इसलिए हल आ जाता है। मिथ्या दर्शन बदल दें और सम्यक् दर्शन कर दें, तब उसका निबेड़ा आ जाता है, तब तक निबेड़ा नहीं आता।

आत्मा शुद्ध ही है। अभी भी आपका आत्मा शुद्ध ही है, सिर्फ आपकी 'बिलीफें''रोंग' बैठी हुई हैं। इसलिए आप इन 'टेम्परेरी' चीज़ों में सुख मान बैठे हों। जो आँखों से दिखता है, कानों से सुनाई देता है, जीभ से चखा जाता है, वह सब,

'ऑल आर टेम्परेरी एडजस्टमेन्ट्स' है और उस 'टेम्परेरी' में आपने सुख माना। अभी आपको इस 'रोंग बिलीफ' का असर हो गया है। यह 'रोंग बिलीफ' फ्रेक्चर हो जाए तो फिर 'टेम्परेरी' में सुख नहीं लगेगा, 'परमानेन्ट' में सुख लगेगा। 'परमानेन्ट' सुख, वह सनातन सुख है, वह आने के बाद फिर जाता नहीं है। और उसे ही आत्मा प्राप्त किया, कहा जाता है, उसे स्वानुभव पद कहते हैं। उस स्वानुभव पद से आगे बढ़ते-बढ़ते फिर पूर्णाहुति हो जाती है।

अशुद्धता की उत्पत्ति किसमें?

प्रश्नकर्ता : कितनी ही सावधानी रखने के बावजूद आत्मा में से अशुद्ध पर्याय क्यों उठते हैं?

दादाश्री : लेकिन इससे 'आपको' क्या फायदा?

प्रश्नकर्ता : हमें कर्म बंधन होता है न?

दादाश्री : तो 'आपमें' से अशुद्ध पर्याय उठेंगे तो 'आपको' ही बंधन होगा न! 'आत्मा' में से उठते ही नहीं। आत्मा में अशुद्ध पर्याय होते ही नहीं। यानी यदि वस्तुस्थिति में बात को समझना हो तो ये अशुद्ध पर्याय और शुद्ध पर्याय और सबकुछ 'आपमें' ही उत्पन्न होते हैं।

आपको मूल हकीकत बता देता हूँ। दो प्रकार के आत्मा हैं, एक मूल आत्मा है और उस मूल आत्मा के कारण उत्पन्न होने वाला दूसरा यह व्यवहार आत्मा है। मूल आत्मा निश्चय आत्मा है, उसमें कोई परिवर्तन हुआ ही नहीं है। वह जैसा है वैसा ही है और उसकी वजह से व्यवहार आत्मा उत्पन्न हो गया है। जिस तरह हम शीशे के सामने जाएँ, तब दो 'चंदूभाई' दिखते हैं या नहीं दिखते?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दो दिखते हैं।

दादाश्री : उसी तरह यह व्यवहार आत्मा उत्पन्न हो गया है। उसे हमने 'प्रतिष्ठित आत्मा' कहा है। उसमें खुद की प्रतिष्ठा की हुई है। इसलिए अगर अभी भी 'आप' प्रतिष्ठा करोगे, 'मैं चंदूभाई हूँ, मैं चंदूभाई हूँ' करोगे तो फिर से अगले जन्म के लिए प्रतिष्ठित आत्मा खड़ा हो जाएगा। इस व्यवहार को सत्य मानोगे तो फिर से व्यवहार आत्मा उत्पन्न होगा। निश्चय आत्मा तो वैसे का वैसा ही है। यदि उसका स्पर्श हो जाए न, तो कल्याण हो जाए! अभी तो व्यवहार आत्मा का ही स्पर्श है।

यह तो अहंकार उत्पन्न हो गया है। लोग कहते हैं, 'आत्मा को दु:ख हो रहा है। मेरा आत्मा बिगड़ गया है'। तो भाई, अगर आत्मा बिगड़ा हुआ है, तो कभी भी सुधरेगा ही नहीं। जिसमें बिगड़ने की शक्ति है तो वह वस्तु सुधरेगी ही नहीं और यहाँ पर बिगड़ता है तो फिर वहाँ सिद्धक्षेत्र में भी बिगड़ेगा। आत्मा वैसा नहीं है। आत्मा जैसा सिद्धक्षेत्र में है, वैसा ही यहाँ पर है। लेकिन वह निश्चय आत्मा है और व्यवहार आत्मा बिगड़ा हुआ है। अब, बिगड़ा हुआ व्यवहार है, उस व्यवहार को शुद्ध करना है। यदि 'ज्ञानी' नहीं मिलें तो व्यवहार को शुभ करना है और यदि 'ज्ञानी' मिल जाएँ तो शुद्ध व्यवहार करना है। बस, इतना ही करना है।

यानी आत्मा में से अशुद्ध पर्याय उठते ही नहीं। सभी अशुद्ध पर्याय व्यवहार आत्मा में से हैं। अब वे पर्याय तो सूक्ष्म से सूक्ष्म, सूक्ष्मतम अवस्था को पर्याय कहते हैं। ये तो सभी बड़ी-बड़ी अवस्थाएँ है, अशुद्ध अवस्थाएँ हैं, स्थूल अवस्थाएँ है। 'मैं चंदूभाई हूँ', यह अवस्था क्या ऐसी-वैसी है?

'व्यवहार आत्मा', माना गया है 'निश्चय आत्मा'

प्रश्नकर्ता : व्यवहारिक आत्मा और निश्चय आत्मा, इन दोनों के अलग-अलग गुण हैं?

दादाश्री : वे अलग ही होते हैं न! निश्चय आत्मा अर्थात् मूल आत्मा।

प्रश्नकर्ता : इसमें आत्मा एक ही और गुण अलग हैं, ऐसा है?

दादाश्री : ऐसा नहीं है। एक आदमी छिंवारों का बड़ा ऐजेन्ट है, सभी लोग उसे कहते हैं 'ये छिंवारे वाले सेठ हैं'लेकिन कोर्ट में वे वकील माने जाते हैं। वे वकालत करते हों, तो वकील माने जाएँगे न? उसी तरह 'आप' अगर व्यवहारिक कार्य में मस्त हो तो 'आप' 'व्यवहारिक आत्मा' हो और निश्चय में मस्त हो, तो 'आप' 'निश्चय आत्मा' हो। मूल तो आप वही के वही हो लेकिन किस कार्य में हो, उस पर आधारित है।

इस तरह व्यवहारिक आत्मा को इन लोगों ने निश्चय आत्मा मान लिया। बोलते ज़रूर हैं कि व्यवहारिक आत्मा, लेकिन उनके ज्ञान में तो उसे निश्चय आत्मा ही समझते हैं। वे समझते हैं कि, 'जो आत्मा है वह यही आत्मा है और आत्मा नहीं होगा तो बोलेंगे किस तरह? चलेंगे किस तरह?' ये चलना-फिरना, बातचीत करना, स्वाध्याय करना, मैं पढ़ता हूँ और मुझे याद रहता है, इन सब के लिए कहेगा कि 'यही आत्मा है, दूसरा कोई आत्मा है ही नहीं'। ऐसा वह समझता है। जबकि यह सब तो आत्मा की परछाई ही है। इस परछाई को पकड़ेगा तो करोड़ों जन्मों तक भी तुझे मूल आत्मा नहीं मिल पाएगा। अक्रम विज्ञान ने तो खुलासा किया कि परछाई को किसलिए पकड़ते हो? इसके बावजूद भी क्रमिक मार्ग वाली वह लाइन गलत नहीं है, लेकिन परछाई को ही आत्मा मानते हैं। आत्मा को आत्मा मानो और परछाई को परछाई मानो, मैं ऐसा कहना चाहता हूँ।

प्रश्नकर्ता : मान्यता में ही बड़ी भूल हुई है।

दादाश्री : मान्यता में भूल हो जाए तो सारी भूल ही है। फिर बचा ही क्या? निश्चय आत्मा, वह शुद्धात्मा है और जो व्यवहार में चलता है, वह व्यवहार आत्मा है, वह प्रतिष्ठित आत्मा है। प्रतिष्ठित आत्मा की मान्यता ही है, वह 'रोंग बिलीफ' उत्पन्न हो गई है इसलिए प्रतिष्ठा ही करता रहता है कि 'यह मैं हूँ, यह मैं हूँ।' उससे पिछली प्रतिष्ठा खत्म होती है और नयी प्रतिष्ठा उत्पन्न होती है। एक तो कहता है कि 'मैं चंदूलाल हूँ', फिर 'इसका मामा हूँ, यह विचार मुझे आया'। अब पिछली प्रतिष्ठा का *आश्रव* (उदय कर्म में तन्मयाकार होना) है। उस *आश्रव* की फिर *निर्जरा* (आत्मप्रदेश में से कर्मों का अलग होना) होती है। वह *निर्जरा* होते समय फिर से वैसी ही डिज़ाइन गढ़ने के बाद में *निर्जरा* होती है। अब जिसे यह ज्ञान दिया हुआ हो, वह क्या कहता है कि, 'मैं चंदूभाई हूँ और इसका मामा हूँ' ऐसा बोलता है, वह पिछली प्रतिष्ठा का ही है। लेकिन आज ज्ञान है, इसीलिए 'वास्तव में मैं चंदूभाई हूँ' ऐसी श्रद्धा खत्म हो चुकी है, इसलिए नयी प्रतिष्ठा नहीं करता। इसलिए वह *संवर* (कर्म का चार्ज होना बंद हो जाना) कहलाता है, बंध पड़ता नहीं और उसकी *निर्जरा* होती रहती है। बंध किसे कहते हैं? जहाँ पर ज्ञान नहीं होता, वहाँ पर बंध पड़ता है। यानी जैसी हम प्रतिष्ठा करते हैं, वैसी ही वापस फिर से प्रतिष्ठा उत्पन्न हो जाती है।

'प्रत्यक्ष' ज्ञानी ही, 'हकीकत' प्रकाशित करते हैं

अब ऐसी बात पुस्तकों में तो लिखी हुई होती नहीं। तब फिर किस तरह से मनुष्य वापस लौटे? पुस्तक में तो कैसा लिखा हुआ होता है, कि कढ़ी में मिर्ची, नमक, हल्दी, गुड़ वगैरह सब डालना। लेकिन कौन-कौन-सी चीज़ और किस तरह से कितने अनुपात में लेना, ऐसा तो नहीं होता न? इसलिए यह वस्तु उसे भीतर समझ

में नहीं आती न! अत: इस प्रतिष्ठित आत्मा को ही पूरी दुनिया आत्मा मानकर बैठी है और उसे स्थिर करना चाहती है। और वह भी गलत चीज़ नहीं है, स्थिर तो करना ही चाहिए। और स्थिर करने से, उसे आनंद मिलता है। जितने समय तक यह प्रतिष्ठित आत्मा स्थिर रहता है, रात को नींद में तो स्थिर हो जाता है, लेकिन दिन में भी जितने समय तक स्थिर रहे, उतने समय तक उसे आनंद रहता है। लेकिन वह आनंद कैसा होता है, कि बस, स्थिरता टूटी कि जैसा था वापस वैसे का वैसा ही हो जाता है। अब यदि साथ ही वह ऐसा जान ले कि मूल आत्मा तो स्थिर ही है, तो 'खुद' 'एडजस्टमेन्ट' ले सकेगा। लेकिन मूल आत्मा की बात लोगों को पता ही नहीं है। इस प्रतिष्ठित आत्मा को ही आत्मा के रूप में स्वीकारा गया है, जबकि वास्तव में यह आत्मा नहीं है। प्रतिष्ठित आत्मा, वह *पुद्गल* है, उसमें चेतन है ही नहीं।

जिसमें जगत् चेतन मान बैठा है, उसमें चेतन नहीं है। यह मेरी खोज है। हम खुद देखकर कह रहे हैं। ऐसा शास्त्रों में नहीं लिखा है। शास्त्रों में तो इसे (प्रतिष्ठित आत्मा को) सुधारने को कहा गया है। 'सुधारते रहो' ऐसा कहा गया है। इसका कोई तरीक़ा तो होना चाहिए न? सुधारने की पद्धति होती है न? जो पद्धति शास्त्रों में बताई जाती है, वह लोगों को *लक्ष* में नहीं है। बहुत सूक्ष्म रूप से बताई गई है। लेकिन वह तो शब्दों से बताई गई है न! यानी क्या है कि शब्दों से बताया गया कि मुंबई जाओ तो मुंबई में ऐसा है, यों है, वहाँ पर जूहू का समुद्र किनारा ऐसा है, वैसा है, लेकिन शब्द से ही। उससे आपको क्या लाभ हुआ? अत: शास्त्र क्या बताते हैं? शब्दों द्वारा बताते हैं। वह अनुभव वाला नहीं है न! शास्त्रों में अनुभव नहीं समा सकता न! अत: 'ज्ञानी पुरुष' की उपस्थिति के बिना इसका स्पष्टीकरण नहीं हो सकता।

'दर्शन' शुद्ध होने पर, शुद्ध में समावेश

एक प्रतिष्ठित आत्मा और एक दरअसल आत्मा। प्रतिष्ठित आत्मा 'मिकेनिकल' है। वह खाए-पीए तभी जीवित रह सकता है, वर्ना ऐसे श्वास बंद कर दें न, तो खत्म हो जाएगा। वह प्रतिष्ठित आत्मा जो कुछ करता है उसमें 'आप' 'मैं करता हूँ' ऐसा अहंकार करते हो, उससे फिर दूसरा नये जन्म का प्रतिष्ठित आत्मा तैयार होता है।

ऐसा है न, मूल असल आत्मा को कुछ भी नहीं हुआ है। यह तो लोगों ने अज्ञान का प्रदान किया न, इसलिए सभी संस्कार उत्पन्न हो गए हैं। जन्म लेते ही लोग 'उसे' 'चंदू, चंदू' करते हैं। अब उस बच्चे को तो पता भी नहीं होता कि ये लोग क्या कर रहे हैं? लेकिन ये लोग उसे संस्कार देते रहते हैं। फिर 'वह' मान बैठता है कि 'मैं चंदू हूँ'। फिर जब बड़ा होता है, तब कहता है, 'ये मेरे मामा हैं और ये मेरे चाचा हैं'। इस तरह से यह सारा अज्ञान प्रदान किया जाता है, उससे भ्रांति उत्पन्न हो जाती है। इसमें होता क्या है कि आत्मा की एक शक्ति आवृत हो जाती है, दर्शन नाम की शक्ति आवृत हो जाती है। उस दर्शन नाम की शक्ति के आवृत होने से यह सब उत्पन्न हो गया है। वह दर्शन जब फिर से ठीक हो जाता है, सम्यक् हो जाता है, तब वापस 'खुद' खुद के 'मूल स्वरूप' में बैठ जाता है। यह दर्शन मिथ्या हो गया है और इसलिए ऐसा मान बैठा है कि 'इस भौतिक में ही सुख है'। वह दर्शन ठीक हो जाएगा तो भौतिक सुख की मान्यता भी खत्म हो जाएगी। और कुछ ज़्यादा बिगड़ा ही

नहीं है। दर्शन ही बिगड़ा है, दृष्टि ही बिगड़ी है। उस दृष्टि को हम पलट देते हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी कि आत्मा को सिर्फ भ्रांति ही हुई है?

दादाश्री : आत्मा को भ्रांति नहीं, यह तो सिर्फ उसका दर्शन ही आवृत हो गया है। मूल आत्मा का जो दर्शन है, वह पूरा दर्शन ही आवृत हो गया है। बाहर के इस अज्ञान प्रदान से, जन्म लेते ही ये बाहरी लोग 'उसे' अज्ञान देते हैं। वे खुद तो अज्ञानी हैं और बच्चे को भी अज्ञान के रास्ते पर ले जाते हैं। इसलिए वह भी ऐसा मान बैठता है और मान बैठता है इसलिए दर्शन आवृत हो जाता है। दर्शन आवृत हो जाता है इसलिए कहता है कि 'ये मेरे ससुर हैं और ये मेरे मामा हैं' और मैं कहता हूँ कि ये सारी रोंग बिलीफें हैं।

'मूल स्वरूप' के भान से 'खुद का' उद्धार

प्रश्नकर्ता : अर्थात् आत्मा का उद्धार आत्मा को खुद को ही करना है, ऐसा ही हुआ न?

दादाश्री : आत्मा का उद्धार आत्मा को खुद को करना है, यानी क्या कि, आत्मा तो, मूलतः उद्धार हो चुका है ऐसी वस्तु है। लेकिन उसमें अपना जो माना हुआ आत्मा है, प्रतिष्ठित आत्मा है, उसकी मान्यता में वह हकीकत नहीं आती। मूल आत्मा का तो उद्धार हो ही चुका है, लेकिन प्रतिष्ठित आत्मा अर्थात् जो खुद अपने आप को आत्मा मानता है, वही 'खुद' जब ऐसा जान लेगा कि, 'मेरा स्वरूप ही ऐसा है, और मैं तो ज्ञान-दर्शन-चारित्रमय हूँ', तब फिर 'उसका' भी उद्धार हो जाएगा। यानी खुद खुद का उद्धार, 'वह' इस तरह से ऐसे पुरुषार्थ करे, तभी तो होगा न! लेकिन जब 'ज्ञानी पुरुष' उसे मिल जाएँ और खुद के स्वरूप का भान करवा दें, उसके बाद पुरुषार्थ कर सकेगा और तब 'उसका' उद्धार हो जाएगा।

वह गुप्त स्वरूप, अद्‌भुत! अद्‌भुत!

इस दुनिया में जानने जैसा क्या है? आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : स्व-स्वरूप।

दादाश्री : बस! उसके अलावा दुनिया में जानने जैसी अन्य कोई वस्तु है ही नहीं। सिर्फ स्व-स्वरूप को ही जानने जैसा है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन वह अद्‌भुत दर्शन क्या होगा?

दादाश्री : अद्‌भुत, वह गुप्त स्वरूप है! जो जगत् से पूर्ण रूप से गुप्त है, गुप्त स्वरूप है। पूरा जगत् ही जिसे नहीं जानता, वह गुप्त स्वरूप, वह अद्‌भुत ही है। उससे अधिक अद्‌भुत वस्तु इस दुनिया में अन्य कोई है ही नहीं। और अद्‌भुत तो इस दुनिया में कोई वस्तु है ही नहीं न! सभी चीज़ें मिल सकती हैं, लेकिन जो गुप्त स्वरूप है न, सिर्फ वही अद्‌भुत है, इस दुनिया में! अतः शास्त्रकारों ने इसे अद्‌भुत, अद्‌भुत, अद्‌भुत कहकर लाखों बार अद्‌भुत कहा है।

मान्यता की ही मूल भूल...

प्रश्नकर्ता : लेकिन हमें भ्रांति तो है ही न?

दादाश्री : किसकी भ्रांति है?

प्रश्नकर्ता : स्व-स्वरूप की भ्रांति ही है न?

दादाश्री : लेकिन भ्रांति वाला स्वरूप कौन-सा है और 'आपका' भ्रांति रहित स्वरूप कौन-सा है? कितना भाग भ्रांति रहित है और कितना भाग भ्रांति वाला है, ऐसा पता ही नहीं है। कुछ ऐसे विभाग ही नहीं किए हैं। 'डिवीज़न' ही नहीं किए न?

प्रश्नकर्ता : आप भ्रांति की क्या परिभाषा देते हैं? किसे भ्रांति रहित मान सकते हैं?

दादाश्री : खुद अविनाशी, खुद की मालिकी की चीज़ें भी अविनाशी और विनाशी चीज़ों को खुद का मानना, उसी को भ्रांति कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी यह एक प्रकार का अज्ञान हुआ न?

दादाश्री : भारी अज्ञान! 'फॉरेन डिपार्टमेन्ट' (अनात्म विभाग) को 'होम डिपार्टमेन्ट' (आत्म विभाग) मानना, इतनी अधिक अज्ञानता है। एक 'फॉरेन डिपार्टमेन्ट' है, यदि उसे ही 'होम डिपार्टमेन्ट' माने तो 'होम' को क्या जानेगा? यानी 'होम' को वह जानता ही नहीं है। और यदि 'फॉरेन डिपार्टमेन्ट' को 'होम डिपार्टमेन्ट' माने तो भी क्या लाभ होगा?

प्रश्नकर्ता : कोई लाभ नहीं होगा।

दादाश्री : तो क्या नुकसान होगा?

प्रश्नकर्ता : अपने वास्तविक स्वरूप को नहीं जानें तो सारा नुकसान ही है।

दादाश्री : नुकसान ही है न! खुद का स्वरूप, वह 'होम डिपार्टमेन्ट' है और 'फॉरेन डिपार्टमेन्ट' में 'मैं चंदूभाई हूँ, मैं प्रोफेसर हूँ, मैं इस स्त्री का पति हूँ, इनका चाचा हूँ, मैं मोटा हूँ, मैं पतला हूँ', ऐसा सब बोलता रहता है, वही भ्रांति कहलाती है। बोलने में हर्ज़ नहीं है, लेकिन यह तो जो बोलते हैं न, उसी पर आपको श्रद्धा है। आप तो व्यवहार और निश्चय, 'फॉरेन' और 'होम'-दोनों को इकट्ठा करके बोलते हो कि 'मैं चंदूभाई ही हूँ'। ओहोहो! बड़े आए चंदूभाई! बिल्कुल ऐसा टेढ़ा ही पकड़ लिया है! यह सब पुसाएगा क्या? आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं पुसाएगा।

दादाश्री : तो इसका कुछ अंत आए ऐसा ज्ञान चाहिए। इस संसार समुद्र में किसी जगह पर किनारा नहीं दिखता। वहाँ घड़ी भर में कहेगा, 'उत्तर में चलो'। उत्तर में जाने के बाद सामने एक आदमी मिला, तो वह कहने लगेगा, 'इस तरफ चलो'। 'अरे, इस तरफ से तो आया हूँ।' तब कहेगा, 'नहीं, लेकिन वापस उस तरफ चलो'। यानी कि ऐसे भटकता, और भटकता ही रहता है, लेकिन कोई अंत या किनारा नहीं दिखता।

स्वभाव की भजना से, स्वाभाविक सुख

यानी कि हम 'आत्मा' को जुदा कर देते हैं, वह इसलिए ताकि 'आप' फिर स्वाभाविक सुख में आ जाओ। फिर आपको चिंता, *उपाधि* (बाहर से आने वाला दु:ख) नहीं होगी। क्योंकि चिंता होती किसलिए है? कि 'मैं ही चंदूभाई हूँ' और 'मैं ही करता हूँ' ऐसा कहते हो, इसलिए चिंता होती है। मनुष्य कुछ कर सकता है क्या? यह करता है या 'इट हेपन्स' (अपने आप) है?

प्रश्नकर्ता : 'इट हेपन्स' यानी कि अपने आप कुछ नहीं होता, ऐसा?

दादाश्री : हाँ, बस। वह इसे खुद अपने आप करने जाता है न, उससे भ्रांति उत्पन्न होती है और कर्ता हुआ, इसलिए चिंता उत्पन्न होती है। खुद है तो अकर्ता, लेकिन कर्तापद धारण किया है और कर्तापद धारण हुआ, उससे भोक्तापद उत्पन्न हुआ, करने गया इसलिए भोक्ता हो गया। और इसीलिए पूरे दिन चिंता, *उपाधि* और कलह! फिर कोई कुछ अपमान करे, तब भी दु:ख होता है।

यानी कि 'खुद' 'खुद के स्वभाव' में आए, इसके लिए 'यह' ज्ञान देना है। उसके बाद, आत्मा, आत्मा में रहता है और अनात्मा, अनात्मा में रहता है। प्रत्येक जीव के अंदर चेतन है, वह प्रकाश ही देता है, और कुछ नहीं करता।

यह जो विनाशी है, यह सारा 'रिलेटिव' है।

'ऑल दीज़ रिलेटिव्स आर टेम्परेरी एडजस्टमेन्टस एन्ड यू आर रियल एन्ड परमानेन्ट'। यानी कि एक टेम्परेरी और एक 'परमानेन्ट' ये दोनों मिल गए हैं। उसका हम विभाजन कर देते हैं, 'लाइन ऑफ डिमार्केशन' (भेदरेखा) डाल देते हैं कि 'दिस इज़ देट एन्ड दिस इज़ नॉट देट' (यह है और यह नहीं है)।

प्रश्नकर्ता : इस विनाशी से अविनाशी जुदा हो जाता है, फिर उसका क्या होता है?

दादाश्री : फिर उसे ये दु:ख नहीं रहते न! ये सांसारिक दु:ख जो हैं कि 'ऐसा हो गया, वैसा हो गया', वे उसे नहीं रहते। फिर मृत्यु आए तो भी डर नहीं लगता, जेब कट जाए तो भी दु:ख नहीं, पत्नी गालियाँ देती हो तो भी दु:ख नहीं, कोई दु:ख ही उत्पन्न नहीं होता न! यानी कि विनाशी से अविनाशी अलग हो जाए तो दोनों अपने-अपने स्वभाव में रहेंगे, और क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : इस प्रकार से जिसका अलग हो चुका है, उसका मृत्यु के बाद में क्या होता है?

दादाश्री : मृत्यु के बाद उसका एक जन्म बाकी रहता है। क्योंकि हम ये जो पाँच आज्ञा देते हैं, उनका पालन करें तो उसका एक जन्म बाकी रहता है।

अध्यात्म का अंधकार दूर करें ज्ञानी

पच्चीस सौ वर्षों से इस देश में अँधेरा चला आ रहा है। इस बीच एक-दो ज्ञानी हुए, लेकिन वह सारा 'प्रकाश' सब जगह पहुँच नहीं सकता। और यह 'प्रकाश' तो पूरा मन की परतों को पार कर लें, बुद्धि की परतों को पार कर लें, तब पहुँच सकता है। अभी तक तो फॉरेन वाले मन की परतों में भी नहीं आए हैं। वे लोग तो सिर्फ निश्चेतन-मन की क्रियाओं में हैं। चेतन-मन तो उन्होंने देखा ही नहीं है, सुना ही नहीं है और फॉरेन वालों को उसकी ज़रूरत भी नहीं है। फॉरेन वालों को आज हम कहें कि अंदर आत्मा है, तो भीतर उन्हें थोड़ा-बहुत समझ में आएगा कि कोई तत्त्व है। लेकिन वे आत्मा को नहीं मानते, लेकिन अन्य कुछ है, ऐसा वे मानते हैं। उन्हें हम कहें कि पुनर्जन्म है, तो वे स्वीकार नहीं करेंगे।

अत: सिर्फ आत्मा को जानना है। अपने हिन्दुस्तान के सभी धर्म क्या कहते हैं कि आत्मा को जानो। फॉरेन में आत्मा की बात ही नहीं है। फॉरेन में तो 'मैं ही विलियम हूँ और मैं ही माइसेल्फ' कहेगा। और जब तक वे लोग पुनर्जन्म में नहीं मानते, तब तक आत्मा का भान नहीं हो सकता। जो लोग पुनर्जन्म को मानते हैं उन्हें आत्मा का पता होता है कि भाई, मेरा आत्मा जुदा है और मैं जुदा हूँ।

और आत्मा एक ऐसी चीज़ है कि जो किसी को मिला ही नहीं, सिर्फ केवल ज्ञानियों को ही मिला था, ऐसा कहें तो चलेगा। अन्य जो केवली हो चुके हैं, वे केवल ज्ञानियों के दर्शन करने से ही हुए हैं। लेकिन वास्तव में यदि खोज़ की है, तो केवल ज्ञानियों ने, तीर्थंकरों ने!

यानी आत्मा प्राप्त हो जाए ऐसी वस्तु नहीं है। इस शरीर में आत्मा किस तरह से मिलेगा? आत्मा ऐसा है कि घरों के आरपार चला जाता है। यहाँ लाख दीवारें हों, उनके भी आरपार चला जाता है, आत्मा ऐसा है। अब इस देह में वह आत्मा किस तरह से मिलेगा 'उसे'?

'ज्ञानी' बर्ताएँ, आत्मपरिणति

प्रश्नकर्ता : तो सांसारिक मनुष्यों को आत्मा मिलता ही नहीं?

दादाश्री : ऐसा कुछ नहीं है। आत्मा ही हो आप। लेकिन 'आपको' खुद को यह भान

नहीं है कि 'मैं' किस प्रकार से 'आत्मा' हूँ, वर्ना 'आप' खुद ही 'आत्मा' हो।

'ज्ञानी पुरुष' जो आत्मज्ञान देते हैं, वह किस तरह से देते हैं? यह भ्रांत ज्ञान और यह आत्मज्ञान, यह जड़ ज्ञान और यह चेतन ज्ञान, उन दोनों के बीच में 'लाइन ऑफ डिमार्केशन' डाल देते हैं। इसलिए फिर वापस भूल होना संभव नहीं रहता। और आत्मा निरंतर *लक्ष* में रहा करता है, एक क्षण के लिए भी आत्मा की जागृति नहीं जाती।

अभी आपमें भी आत्मा और अनात्मा दोनों के धर्म अलग ही हैं। लेकिन आपमें दोनों परिणाम एक साथ निकलते हैं, इसलिए आपको बेस्वाद लगता है। दोनों के धर्म के परिणाम मिक्सचर करने से बेस्वाद हो जाता है। जबकि 'ज्ञानी पुरुष' में चेतन परिणाम अलग रहते हैं और अनात्म परिणाम अलग रहते हैं। दोनों धाराएँ अलग-अलग बहती हैं, इसलिए निरंतर परमानंद में रहते हैं।

ऐसा है, खाना, पीना, नहाना, उठना, सोना, जागना, ये सभी देह के धर्म हैं और सभी लोग देह के धर्म में ही पड़े हैं। 'खुद' 'आत्मधर्म' में एक बार एक सेकन्ड के लिए भी आया नहीं है। यदि एक सेकन्ड के लिए भी आत्मधर्म में आया होता तो भगवान के पास से खिसकता नहीं।

'मोक्षदाता' बर्ताएँ मोक्ष यहीं पर

प्रश्नकर्ता : उस आत्मा को जानने की कुछ चाबियाँ तो होंगी न?

दादाश्री : उसकी चाबियाँ वगैरह कुछ नहीं होता। वह तो 'ज्ञानी' के पास जाकर उनसे कह देना कि, 'साहब, मैं बिल्कुल बेअक्ल मूर्ख व्यक्ति हूँ। अनंत जन्मों से भटका, लेकिन आत्मा का एक अंश, बाल जितना भी मैंने जाना नहीं। इसलिए आप मुझ पर इतनी कुछ कृपा कीजिए'। तो बस, काम हो गया। क्योंकि 'ज्ञानी पुरुष', वे तो मोक्ष का दान देने के लिए ही आए हैं।

और वापस फिर लोग शोर मचाते हैं कि, 'तब फिर हमारे व्यवहार का क्या होगा?' आत्मा जानने के बाद जो बाकी बचा, वह सारा व्यवहार माना जाता है और व्यवहार के लिए भी फिर 'ज्ञानी पुरुष' पाँच आज्ञा देते हैं कि, 'भाई, ये मेरी पाँच आज्ञा का पालन करना। जा, तेरा व्यवहार भी शुद्ध और निश्चय भी शुद्ध और जोखिमदारी सब हमारी'!

और मोक्ष यहीं से बरतना चाहिए। मोक्ष यहीं से न बर्ते तो वह सच्चा मोक्ष नहीं है। यहाँ पर 'मुझसे' मिलने के बाद अगर आपको मोक्ष न बर्ते तो ये 'ज्ञानी' सच्चे नहीं हैं और यह मोक्ष भी सच्चा नहीं है। यहीं पर, इस पाँचवे *आरे* में ही मोक्ष बरतना चाहिए। यहीं पर इस कोट-टोपी के साथ मोक्ष बरतना चाहिए। बाकी, वहाँ पर तो बरतेगा, उसका क्या ठिकाना? इसलिए 'ज्ञानी पुरुष' से ऐसा तय करवा लेना है कि 'खुद' किस प्रकार से 'आत्मा' है।

अनादि से 'स्वरूप' निर्धारण में ही भूल

प्रश्नकर्ता : मुझे ऐसा लगता है कि आत्म स्वरूप का निर्णय करने में जल्दबाज़ी क्यों करनी चाहिए?

दादाश्री : हाँ, जल्दबाज़ी करने की ज़रूरत नहीं है। यहाँ पर तो आपको जितने प्रश्न पूछने हों उतने प्रश्न पूछो, खुलासा देने के लिए हम तैयार हैं। जो निर्णय करना हो, वह भी यहाँ पर हो सकता है। लेकिन पहले वह निर्णय कर लेना चाहिए, उस समय ही सतर्कता रखनी है। और एक बार निर्णय करने के बाद सतर्कता की कोई ज़रूरत नहीं रहती। इसलिए जल्दबाज़ी में निर्णय करने की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि यह तो अनंत जन्मों की भूल मिटानी है। अनंत जन्मों से जो

भूल मिटी नहीं है, उस भूल को मिटाना है और कौन-सी भूल हुई है अनंत जन्मों से? अनादिकाल से आत्म स्वरूप का निर्णय होने में भूल होती आई है, उसे मिटाना है। अत: इसमें जल्दबाज़ी करनी ही नहीं चाहिए न!

वह आत्म स्वरूप ऐसा है कि आपकी दृष्टि में नहीं आ सकेगा। अब आपका खुद का ज्ञान कुछ हद तक का ही जानता है, उसकी तुलना में आत्म स्वरूप तो बहुत आगे है। इसलिए आपका खुद का ज्ञान भी वहाँ पर पहुँच नहीं सकेगा। जहाँ पर आपकी दृष्टि नहीं पहुँच सकती, जहाँ पर आपका ज्ञान नहीं पहुँच सकता, ऐसा 'खुद का' स्वरूप है, वह 'आत्म स्वरूप' है!

यानी कि 'मैं कौन हूँ' इसे जानना, वही खुद का स्वरूप है। और उसे सिर्फ 'ज्ञानी पुरुष' ही 'रियलाइज़' (भान) करवा सकते हैं। फिर मरना और जन्म लेना रहता ही नहीं न! फिर मरना हो तो देह मरेगा, 'खुद को' नहीं मरना है और एक-दो जन्मों में मोक्ष हो जाएगा।

सभी साधन ही बंधन बनें

प्रश्नकर्ता : आप ऐसा साधन बता सकते हैं कि जिससे आत्मज्ञान हो जाए?

दादाश्री : साधन तो बहुत सारे जाने हैं, लेकिन जीव साधनों में ही उलझा हुआ है। जो साधन होते हैं न, उन साधनों में ही लोगों को फिर अभिनिवेष (अपने मत को सही मानकर पकड़े रखना) हो जाता है। किसी भी प्रकार का रोग नहीं घुसे, ऐसा जाग्रत हो, 'अलर्ट' हो, तो कुछ आगे बढ़ सकेगा। बाकी साधनों में ही उलझकर अभिनिवेष हो जाता है। यानी कि जिनका छुटकारा हो चुका है, ऐसे 'ज्ञानी पुरुष' मिल जाएँ तो आपका कुछ छुटकारा करवा देंगे, वर्ना तब तक संत पुरुषों के पास बैठ सकें, तो उसके जैसा बड़ा पुण्य भी और कोई नहीं है। बाकी संसार के त्रिविध ताप में से किस तरह से निकल पाएगा? फिर भी वे संत पानी छिड़कते रहते हैं, जिससे ठंडक रहती है।

प्रश्नकर्ता : फिर भी किसी भी साधन के सहारे के बिना आगे किस तरह से बढ़ा जा सकता है? कोई साधन तो चाहिए न?

दादाश्री : सभी साधन ही बंधन हो चुके हैं। आपको बाँधा किसने है? साधनों ने ही आपको बाँधा है। इन लोगों ने जितने-जितने साधन अपनाए हैं न, उन साधनों ने ही इन्हें बाँधा है। अत: आत्मा किस तरह से जानोगे? आत्मा तो खुद ही विज्ञान है। और आप जो सब साधन करते हो, ज्ञान के साधन करते हो और वह ज्ञान भी शुष्क ज्ञान है। यानी कि उसमें आपको सबकुछ करना पड़ता है। जबकि विज्ञान तो 'इटसेल्फ' क्रियाकारी होता है, खुद ही काम करता रहता है, आपको कुछ भी नहीं करना है। और विज्ञान से आत्मा जाना जा सकता है। अन्य कोई ऐसा साधन नहीं है कि (जिससे) आत्मा जाना जा सके। यह आपको साधन बताया है। अब यह विज्ञान, यह आप कर लोगे?

प्रश्नकर्ता : पता नहीं चला, कौन-सा विज्ञान?

दादाश्री : आत्मविज्ञान। आत्मविज्ञान अर्थात् आत्मा प्राप्त करने का जो विज्ञान है, वह विज्ञान होगा तभी आत्मा प्राप्त हो सके, ऐसा है। नहीं तो आत्मा प्राप्त करने के शास्त्र में तो ज्ञान निकलता है, लेकिन उस ज्ञान से कुछ आत्मा प्राप्त हो सके, ऐसा नहीं है। क्योंकि आत्मा शब्द रूप तो है नहीं, कि शास्त्र में उतर सके। वह तो नि:शब्द है, अवक्तव्य है, अवर्णनीय है। बाकी लोगों ने जो कल्पना की है, आत्मा वैसा नहीं है। यह तो

मन में मानकर बैठे रहते हैं और पूरी रात और दिन निकाल देते हैं और अंदाज़े से चलते रहते हैं और अनंत जन्मों से भटक रहे हैं, लेकिन अभी तक जन्म तो एक भी कम नहीं हुआ!

क्रिया नहीं, भान बदलना है

प्रश्नकर्ता : सांसारिक ज़िम्मेदारियों से बंधे हुए मनुष्य आत्मा किस तरह प्राप्त कर सकते हैं?

दादाश्री : 'चंदूलाल' और 'आत्मा', दोनों बिल्कुल अलग ही हैं और अपने-अपने अलग गुणधर्म बताते हैं। वे यदि 'ज्ञानी' के पास से समझ लिए जाएँ तो सांसारिक जिम्मेदारियाँ अच्छी तरह से निभाई जा सकेंगी और 'यह' भी हो सकेगा। ज्ञानी भी खाते-पीते, नहाते-धोते सबकुछ करते हैं। आपके जैसी ही क्रियाएँ करते हैं, लेकिन 'मैं नहीं कर रहा हूँ', उन्हें ऐसा भान रहता है। और अज्ञान दशा में 'मैं कर रहा हूँ', ऐसा भान होता है। अर्थात् सिर्फ भान में ही फर्क है।

इसे समझने की कोशिश, फलदायी होगी?

प्रश्नकर्ता : यों तो मैं भी आत्मा को समझने की ही कोशिश कर रहा हूँ।

दादाश्री : यह समझने की कोशिश कब होगी? 'आप' 'चंदूभाई' हो, तो समझने की कोशिश किस तरह करोगे? और वास्तव में 'आप' चंदूभाई हो ही नहीं। चंदूभाई तो आपका नाम है। 'आप' इस बच्चे के 'फादर' (पिता) हो, यह भी व्यवहार है और यह सब तो हम कबूल करते ही हैं न! उसमें नयी बात क्या है? यह तो पहचानने का साधन है। अत: 'आप कौन हो', उसका तो 'ज्ञानी पुरुष' के पास जाकर पता लगाना चाहिए, उसका 'रियलाइज़' करना चाहिए।

आपको तो यह विश्वास है ही न, कि 'मैं चंदूभाई हूँ?'

प्रश्नकर्ता : नहीं, यह नाम तो लोकभाषा में है, बाकी 'मैं एक आत्मा हूँ' बस, और कुछ नहीं।

दादाश्री : हाँ, आत्मा हो लेकिन कोई चंदूभाई को गाली दें तो उसकी चिट्ठी आप नहीं लेते हो न? ले लेते हो, तब तो आप चंदूभाई हो। फिर लोक-भाषा नहीं कह सकते। चंदूभाई को गाली दें तो आप चिट्ठी क्यों ले लेते हो? इसलिए आप चंदूभाई हो गए हो।

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में रहने के लिए तो सब करना पड़ता है न!

दादाश्री : नहीं। व्यवहार में रहना है लेकिन चंदूभाई की चिट्ठी आपको नहीं लेनी चाहिए। ऐसा कह सकते हैं कि, 'भाई, यह चंदूभाई की चिट्ठी है। मुझे हर्ज नहीं है। आपको जितनी गालियाँ देनी हों उतनी दो'। लेकिन आप तो चंदूभाई होकर रहते हो। चंदूभाई के ईनाम आपको खाने हैं और फिर कहते हो 'मैं आत्मा हूँ'। इस तरह से कोई आत्मा हो जाए, ऐसा हो सकता है?

संसार में 'असंगता', कृपा से प्राप्त

'आप आत्मा हो' आपको ऐसा यकीन किस तरह से हो गया?

प्रश्नकर्ता : उसके लिए आपके जैसे गुरु के पास जाते हैं, वहाँ पर देह और आत्मा अलग किस प्रकार से हैं, ऐसा उपदेश सुना हुआ है। बाकी हम लोगों में और आपमें बहुत फर्क है न? हम यानी संसारी, मोह-माया में रहे हुए लोग...

दादाश्री : और हम क्या संसारी नहीं है? हम भी संसारी ही हैं। इस दुनिया में जो संडास जाते हैं, वे सभी संसारी हैं। जिन्हें संडास जाने की ज़रूरत पड़ती हैं और जो संडास ढूँढते हैं, वे सभी संसारी कहलाते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन हमारे जैसों को संसार में रहकर आत्मज्ञान मिल जाए, मोक्ष हो जाए, वह कैसे?

दादाश्री : ऐसा है न, संसार दो प्रकार का है। त्यागी भी संसार है और गृहस्थी भी संसार है। दोनों प्रकार के संसार हैं। त्याग वाले को 'मैंने इसका त्याग किया है, इसका त्याग किया है' ऐसा ज्ञान बरतता है। और गृहस्थियों को 'यह मैं ले रहा हूँ, यह मैं दे रहा हूँ, यह ग्रहण करना है' ऐसा ज्ञान उसे बरतता है। लेकिन अगर आत्मा को जान लिया तो मोक्ष हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन क्या संसार में रहकर, संसार के फर्ज़ पूरे करते-करते भी उससे अलिप्त रहा जा सकता है?

दादाश्री : यही 'ज्ञानी पुरुष' के पास हैं न! 'ज्ञानी पुरुष' के पास जो 'विज्ञान' होता है, वही देते हैं, फिर उससे संसार व्यवहार का भी सबकुछ हो सकता है और आत्मा का भी हो सकता है। 'ज्ञानी पुरुष' के पास ऐसा 'विज्ञान' होता है।

मैं आपके साथ बातचीत कर सकता हूँ। यानी संसार में भी रह सकता हूँ और मैं अपने आप में भी रह सकता हूँ दोनों कर सकता हूँ। इस संसार की जो सभी क्रियाएँ करनी होती हैं, वे भी करता हूँ। संसार में भी रह पाता हूँ और आत्मा में भी रह पाता हूँ। यदि आत्मा प्राप्त हुआ हो तो उन्हें समकित हो चुका होता और समकित अर्थात् इस संसार में रहने के बावजूद संसार स्पर्श नहीं करे। और वह 'ज्ञानी पुरुष' की कृपा से प्राप्त होता है।

'ज्ञानी पुरुष' के पास पूरा 'विज्ञान' होता है, वह शास्त्रों में नहीं होता। शास्त्रों के अनुसार तो यह सब छोड़ने पर ही छुटकारा हो सकता है। ऐसे लोगों के साथ में रहना और दिन बिताना और कर्म नहीं बंधे इस प्रकार से रहना, वैसे किस तरह से रह सकते हैं? वह सारी विद्या मैं आपको सिखा दूँगा। लेपायमान हों नहीं, ऐसी विद्या मैं बता दूँगा। वर्ना यह दुनिया तो लेपायमान ही है। जैसे कमल पानी में रहकर भी निर्लेप रहता है न, उसी तरह की निर्लेपता आपको बता दूँगा।

'ज्ञानी पुरुष' के पास ऐसा आत्मा जानने बैठे, तब 'ज्ञानी पुरुष' की सामायिक से पाप भस्मीभूत हो जाते हैं। और पाप भस्मीभूत हो जाएँ, तभी आत्मा *लक्ष* में आता है, नहीं तो *लक्ष* में नहीं आ पाता। और फिर वह *लक्ष* निरंतर रहता है, नहीं तो दुनिया की कोई चीज़ निरंतर याद ही नहीं रहती। थोड़ी देर याद आती है और फिर वापस भूल जाते हैं। और यह तो 'ज्ञानी पुरुष' के पास पाप धुल जाते हैं, इसलिए आत्मा का *लक्ष* बैठता है।

यानी जानने जैसी चीज़ इस दुनिया में यदि कोई है तो वह आत्मा है। और आत्मा को जानने वाले लोग इस दुनिया में मुश्किल से एक या दो ही होते हैं। यानी कि हर कोई आत्मा को नहीं जान सकता। मनुष्य बाकी सभी कुछ जान सकता है, परंतु आत्मा को नहीं जान सकता। और जो आत्मा को जान ले न, उसे केवलज्ञान होने में देर ही नहीं लगेगी।

अब यदि वे आत्मा को 'ज्ञानी पुरुष' से जानेंगे तब आत्मा प्राप्त होगा, वर्ना आत्मा कभी भी प्राप्त नहीं होगा। 'ज्ञानी पुरुष' ने आत्मा देखा है, जाना है, अनुभव किया हुआ है और 'खुद' 'आत्मा' स्वरूप ही रहते हैं। इसलिए ऐसे 'ज्ञानी पुरुष' के पास से 'खुद' 'आत्मा' को जानेगा, तब काम होगा।

जय सच्चिदानंद

'ज्ञानी' के परिचय से, अनंत शक्तियाँ व्यक्त होती है

प्रश्नकर्ता : आत्मा में अनंत शक्तियाँ हैं क्या?

दादाश्री : हाँ। लेकिन वे शक्तियाँ 'ज्ञानीपुरुष' के माध्यम से प्रकट होनी चाहिए। जैसे कि जब आप स्कूल में गए थे, तब वहाँ पर सिखाया था न? आपका ज्ञान तो था ही आपके अंदर, लेकिन वे प्रकट कर देते हैं। उसी प्रकार 'ज्ञानीपुरुष' के पास आपकी खुद की शक्तियाँ प्रकट हो सकती हैं। अनंत शक्तियाँ हैं, लेकिन वे शक्तियाँ ऐसे के ऐसे दबी हुई पड़ी हैं। वे शक्तियाँ हम खुली कर देते हैं। जबरदस्त शक्तियाँ दबी हुई हैं! वे सिर्फ आपमें अकेले में नहीं हैं, जीव मात्र में ऐसी शक्तियाँ हैं, लेकिन क्या करें? यह तो लेयर्स पर लेयर्स (आवरण) डाले हुए हैं सारे!

प्रश्नकर्ता : आत्मा की शक्ति और शारीरिक शक्ति, इन दोनों में कोई संबंध है क्या?

दादाश्री : इन दोनों की शक्तियाँ अलग ही हैं।

प्रश्नकर्ता : वे दोनों एक-दूसरे पर असर डालते हैं?

दादाश्री : डालते ही हैं न! इस शारीरिक शक्ति के कारण तो वह आत्मा की शक्ति बंद हो जाती है। शारीरिक शक्ति अधिक होती है तो पाशवता बढ़ती है।

प्रश्नकर्ता : और आत्मा की शक्ति अधिक हो तो?

दादाश्री : पाशवता कम होती है और मनुष्यपन उत्पन्न होता है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर आत्मा की शक्ति को प्राप्त करने के लिए मनुष्य को क्या प्रयत्न करना चाहिए?

दादाश्री : आत्मा की शक्ति अंदर है ही। आत्मा की शक्ति, वह तो परमात्मापन की शक्ति है। बाकी उस परमात्मा में एक सेका हुआ पापड़ तोड़ने की भी शक्ति नहीं है और यों अनंत शक्तियों के वे मालिक हैं!

प्रश्नकर्ता : हमें तो इन सबका मेल नहीं बैठता।

दादाश्री : वह मेल बैठना ही चाहिए। जब तक मेल नहीं बैठता न, तब तक समझने में फ़र्क़ है ज़रा! यदि मेल नहीं बैठे न, तो वह ज्ञान ही नहीं है, जब अज्ञान हो, तभी मेल नहीं बैठता। वर्ना मेल बैठना ही चाहिए, परन्तु उसके लिए थोड़ा 'टाइम' निकालकर हमें परिचय करना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : किस तरह से?

दादाश्री : यहाँ साथ में बैठकर, ज़रा 'टाइम' निकालकर, विशेष रूप से बैठकर 'ज्ञानीपुरुष' से परिचय करना पड़ेगा!

आत्मा की अनंत ज्ञानशक्तियाँ हैं, एकाध-दो ज्ञानशक्तियाँ हैं, ऐसा नहीं है। ये अनंत ज्ञानशक्तियाँ हैं, उसके आधार पर तो ज्योतिष ज्ञान, वकालत का ज्ञान, डॉक्टरी ज्ञान, ये सारा ज्ञान अनावृत हुआ है। हर एक के अलग-अलग 'सब्जेक्ट्स' होते हैं, वे सभी ज्ञान अनावृत हो जाएँ, इतनी सारी ज्ञानशक्तियाँ हैं! यानी आत्मा अनंत शक्ति का धनी है! अनंत ज्ञान शक्ति हैं और अनंत वीर्य शक्तियाँ हैं!! बहुत ग़ज़ब की शक्ति के मालिक हैं, ऐसे ये परमात्मा हैं!!!

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

आत्मज्ञानी पूज्य नीरूमाँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

मध्यप्रदेश

ग्वालियर	दिनांक : 21-22 सितम्बर	संपर्क : 9926265406
इन्दौर	दिनांक : 21-22 सितम्बर	संपर्क : 9229500845
उज्जैन	दिनांक : 23 सितम्बर	संपर्क : 9826487407
अंजड	दिनांक : 24 सितम्बर	संपर्क : 9617153253
खरगोन	दिनांक : 25 सितम्बर	संपर्क : 9425643302
जबलपुर	दिनांक : 26-27 सितम्बर	संपर्क : 9425160428
भोपाल	दिनांक : 28-29 सितम्बर	संपर्क : 9826926444

असम

बक्सा	दिनांक : 26 सितम्बर	संपर्क : 6002103839
नलबारी	दिनांक : 27 सितम्बर	संपर्क : 8761961387
गुवाहाटी	दिनांक : 28-29 सितम्बर	संपर्क : 9954821135
तिनसुकिया	दिनांक : 1-2 अक्तूबर	संपर्क : 9954591264

बिहार - झारखंड

पटना	दिनांक : 20 सितम्बर	संपर्क : 7352723132
पटना	दिनांक : 21-22 सितम्बर	संपर्क : 7352723132

(बिहार और झारखंड के महात्माओं के लिए पटना में आप्तपुत्र सत्संग शिविर)

पूर्णिया	दिनांक : 23 सितम्बर	संपर्क : 7488744604
कटिहार	दिनांक : 24 सितम्बर	संपर्क : 9931825351
जमशेदपुर	दिनांक : 21-22 सितम्बर	संपर्क : 9931538777

छत्तीसगढ़ - पश्चिम बंगाल

रायपुर	दिनांक : 26 सितम्बर	संपर्क : 9179025061
रायपुर	दिनांक : 28-29 सितम्बर	संपर्क : 9179025061

(छत्तीसगढ़ के महात्माओं के लिए रायपुर में आप्तपुत्र सत्संग शिविर)

भिलाई	दिनांक : 1 अक्तूबर	संपर्क : 9407982704
आसनसोल	दिनांक : 23 सितम्बर	संपर्क : 7679186469

पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए भारत में विविध टी.वी. चैनल पर...

- '**साधना**' पर हर रोज़ सुबह 7-50 से 8-15 (हिन्दी में)
- '**दूरदर्शन उत्तरप्रदेश**' पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 और दोपहर 3 से 4 (हिन्दी में)
- '**दूरदर्शन सह्याद्रि**' पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-45 (मराठी में)
- '**दूरदर्शन सह्याद्रि**' पर हर रोज़ दोपहर 3-30 से 4 सोम से शुक्र और शनि-रवि दोपहर 11-30 से 12
- '**आस्था कन्नड़ा**' पर हर रोज़ दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्नड़ा में)
- '**दूरदर्शन चंदना**' पर हर रोज़ शाम 6-30 से 7 (कन्नड़ा में)
- '**धर्म संदेश**' पर हर रोज़ सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9 (गुजराती में)
- '**दूरदर्शन गिरनार**' पर रोज़ सुबह 7-30 से 8-30, रात 9-30 से 10-30 (गुजराती में)

Atmagnani Pujya Deepakbhai's Australia-New Zealand Satsang Schedule - 2024						
Date	**Day**	**Session**	**From**	**To**	**Venue**	**Contact No. & Email**
19 Sep	Thu	Aptaputra Satsang	10:30 AM	12:30 PM	Vasto Club 5 Vasto Place Balcatta, **Perth**, WA 6021, **Australia**	+61425255677 +61416330471 perth@au.dadabhagwan.org
		Satsang	7:00 PM	9:00 PM		
20 Sep	Fri	Aptaputra Satsang	10:30 AM	12:30 PM		
		Gnanvidhi	7:00 PM	10:00 PM		
27 Sep	Fri	Satsang	7:00 PM	9:30 PM	Sant Nirankari Mission 166 Glendenning Road Glendenning, **Sydney** NSW 2761, **Australia**	+61431083777 +61402179706 sydney@au.dadabhagwan.org
28 Sep	Sat	Aptaputra Satsang	10:30 AM	12:30 PM		
		Gnanvidhi	5:00 PM	8:30 PM		
29 Sep	Sun	Satsang	5:00 PM	7:00 PM		
1 Oct	Tue	Satsang	7:00 PM	9:00 PM	Western Springs Garden Community Hall, 956 Great North Road, WesternSprings, **Auckland** 1022, **New Zealand**	+64210612379 info@nz.dadabhagwan.org
2 Oct	Wed	Aptaputra Satsang	11:00 PM	12:30 PM		
		Gnanvidhi	5:00 PM	8:00 PM		

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में सत्संग कार्यक्रम

अडालज

31 अक्तूबर (गुरु) - **दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति**

2 नवम्बर (शनि) - **नूतन वर्ष (वि. सं. 2081) के अवसर पर विशेष कार्यक्रम**

23 नवम्बर (शनि) - **सत्संग** और **24 नवम्बर** (रवि) - **ज्ञानविधि**

21 से 28 दिसम्बर - **आप्तवाणी 14 भाग-4 पर सत्संग पारायण** (हिन्दी-अंग्रेजी में ट्रान्सलेशन उपलब्ध रहेगा।)

29 दिसम्बर - **श्री सीमंधर स्वामी की छोटी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा**

वडोदरा

परम पूज्य दादा भगवान का 117वाँ जन्मजयंती महोत्सव - 10 से 15 नवम्बर

10 से 13 नवम्बर - सत्संग, 14 नवम्बर - जन्मजयंती दिवस, 15 नवम्बर - ज्ञानविधि

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687, **भावनगर :** 9313882288, **अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** 9574001445, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820 **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

शिकागो : गुरुपूर्णिमा महोत्सव : ता. 16 से 22 जुलाई 2024

लॉस एंजिल्स : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 27 से 31 जुलाई 2024

सितम्बर 2024
वर्ष-19 अंक-11
अखंड क्रमांक - 227

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Licensed to Post Without Pre-payment
No. PMG/NG/030/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

ज्ञानी पुरुष पहचान करवाए विज्ञान स्वरूप आत्मा का

आत्मा ज्ञान-स्वरूप नहीं है, विज्ञान-स्वरूप है। इसलिए विज्ञान को जानो। वीतराग विज्ञान मुश्किल नहीं है, लेकिन उनके ज्ञाता और दाता नहीं होते। कभी ही ऐसे 'ज्ञानी पुरुष' होते हैं, तब इसका स्पष्टीकरण मिल जाता है। बाकी, सब से सरल चीज़ है तो वह वीतराग विज्ञान है; अन्य सभी विज्ञान मुश्किल हैं। अन्य विज्ञान के लिए तो 'रिसर्च सेन्टर' (अनुसंधान केन्द्र) बनाने पड़ते हैं और पत्नी-बच्चों को बारह महीनों तक भूल जाते हैं, तब रिसर्च हो पाता है! और यह वीतराग विज्ञान तो, 'ज्ञानी पुरुष' के पास गए तो प्राप्त हो जाता है, सहज ही प्राप्त हो जाता है।

-दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner.
Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral - Pratappura Road,
At - Chhatral, Tal : Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.